

— सम्पादक —
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
 — सहायक —
 मु० सरवर फारूकी नदवी
 मु० हसन अन्सारी
 हबीबुल्लाह आजमी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
 मजलिसे सहाफत व नशरियात
 पो० बॉ० नं० 93
 टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
 फोन : 2741235
 फैक्स : 2787310
 e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि	
एक प्रति	रु० 9/-
वार्षिक	रु० 100/-
विशेष वार्षिक	रु० 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/झापट पर यह लिखें :
“सच्चा राही”
 पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफत
 व नशरियात नदवतुल उलमा,
 लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन
 द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से
 मुद्रित एवं दफतर मजलिस
 सहाफत व नशरियात, टैगोर
 मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ
 से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

मई, 2004

वर्ष 3

अंक 3

रहमते आलम

अल्लाह तआला ने हजरत
मुहम्मद (वस्तुतः अस्ति वा दाक्षिण्य) से फ़रमाया:

हमने तो आप को सारे जहानों के
 लिए सिर्फ रहमत बनाकर भेजा है।
 पिंवित्र कुर्�आन (22:107)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है।
 कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

विषय एक नज़र में

- हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
- कुर्�आन की शिक्षा
- प्यारे नबी की प्यारी बातें
- इस्लाम में मानवता की प्रतिष्ठा
- प्रजा के साथ सहानुभूति
- हमारे हुजूर स० आखिरी वक्त में
- बच्चियों की तालीम व तर्बियत
- रबीउलअव्वल का अस्ल सन्देश
- उस पे लाखों दुर्सद उसपे लाखों सलाम
- खुदा को भलू जाने की सजा स्वयं को ...
- हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम
- नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नसब
- दुश्मन से होश्यार
- हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का पवित्र जीवन
- आपकी समस्याएं और उनका हल
- जादू से सम्बन्धित
- नागपुर सेन्ट्रल जेल से एक पत्र
- चलता फिरता कैदखाना
- एक एजेन्सी से एक खत
- केला एक पौष्टिक आहार
- तिब्बे नबवी
- सिल-ए-रहिमी
- मिअराज यात्रा
- हमारे हुजर (स०) की हिजरत
- हमारे हुजर (स०) के कुछ मुअजिज़े
- अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

सम्पादकीय.....	3
मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)	5
मौलाना सय्यद अब्दुल हयी हसनी	6
मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी	8
डा० मु० इज्जिबा नदवी	11
माखूज	14
खैरुन्निसां बेहतर	15
मौ० मुहम्मद राबे हसनी	16
मौ० मु० सानी हसनी	18
मौ० अली मियां	18
आसिफ अन्जार नदवी	21
इदारा	22
हैदर अली नदवी	23
हबीबुल्लाह आज़मी	24
मुहम्मद सरवर फारूकी नदवी	26
अबू मर्गूब	28
.....	28
सादिका तस्नीम फारूकी	29
.....	30
मुजफ्फर हुसैन	31
गुफरान नदवी	32
मुफ्ती अब्दुर्रहीम	34
मुरसलीन सिद्दीकी	37
नासिर अय्यूब	38
मू० अहसन	39
हबीबुल्लाह आज़मी	40



हज़रत मुहम्मद (सलललाहु अलैहि व सललम)

डा० हारून रशीद सिद्दीकी

रब ने जिस को भेज कर हम पर किया उपकार है।

सुन लो उस की जीवनी में मानव का उद्धार है ॥

हमारे स्वामी अल्लाह के प्रिय तथा अन्तिम सन्देष्टा (रसूल) हज़रत मुहम्मद (सलललाहु अलैहि व सललम) का सौभाग्यशाली जन्म प्रसिद्ध कथन के अनुसार १२ रबीउल अब्दल सोमवार के दिन प्रातः काल में मक्कानगर में हुआ। अंग्रेज़ी तारीख़ २० अप्रैल ५७१ ई० लिखी गई है।

आप (सलललाहु अलैहि व सललम) की जननी माता जी का नाम आमिना और पिता महोदय का शुभनाम अब्दुल्लाह था जिन का देहान्त आप (सलललाहु अलैहि व सललम) के धरती पर आने से पहले ही हो चुका था।

आप (सलललाहु अलैहि व सललम) के जन्म के समय और उसके कुछ पूर्व की कुछ अद्भुत बातें लोगों से ज्ञात हुईं जो आप (सलललाहु अलैहि व सललम) की जीवनी लिखने वालों ने लिखी हैं। जैसे कुछ पशुओं ने मानव बोली में आप (सलललाहु अलैहि व सललम) के जन्म लेने की शुभ सूचना दी। कुछ वृक्षों से आप (सलललाहु अलैहि व सललम) के जन्म लेने की सूचना सुनी गयी। कुछ मूर्ति पूजकों ने व्यापार किया कि उन्होंने कुछ मूर्तियों से आप (सलललाहु अलैहि व सललम) के जन्म लेने की सूचना सुनी। इसी प्रकार की बहुत सी बातें प्रसिद्ध हैं।

कितनी भाग्यवान थीं बनी सअःद गोत्र की हलीम सअःदिया जिन्होंने हमारे हुजूर (सलललाहु अलैहि व सललम) को दूध पिलाने का सम्मान प्राप्त किया। आप (सलललाहु अलैहि व सललम) ६ वर्ष के थे कि माता जी का देहान्त हो गया। अब दादा अब्दुल मुत्तलिब ने बड़े लाड व प्यार से अपने पास रखा लेकिन जब आप (सलललाहु अलैहि व सललम) आठ वर्ष के हुए तो दादा जी भी न रहे अब आप (सलललाहु अलैहि व सललम) अपने चचा अबू तालिब के साथ रहने लगे।

आप (सलललाहु अलैहि व सललम) ने न किसी से पढ़ना सीखा न लिखना ना ही कोई कला (हुनर) सीखी। अल्लाह तआला ने आप (सलललाहु अलैहि व सललम) को "उम्मी" की उपाधि दी। अर्थात् वह जिस ने किसी से लिखना पढ़ना न सीखा हो। जब आप (सलललाहु अलैहि व सललम) को जगत् गुरु बनना था तो अल्लाह को मंजूर न हुआ कि अपने अतिरिक्त किसी और को भी आप (सलललाहु अलैहि व सललम) का गुरु बनाएं।

जब आप (सलललाहु अलैहि व सललम) जवान हुए तो आप ने व्यापार भी किया है। मक्का मुकर्मा की एक चरित्रवान तथा धनवाना महिला ख़दीजा रज़ि० के साझे में भी आप (सलललाहु अलैहि व सललम) ने व्यापार किया है। इस प्रकार कि पैसा हज़रत ख़दीजा का और मेहनत आप (सलललाहु अलैहि व सललम) की हानि लाभ में बटवारा। हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) विधवा थीं। उनको कई सज्जन पुरुषों ने विवाह सन्देश दिया था परन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया था परन्तु हमारे हुजूर (सलललाहु अलैहि व सललम) के चरित्र तथा स्वभाव से ऐसी प्रभावित हुईं कि स्वयं आप (सलललाहु अलैहि व सललम) को विवाह सन्देश दे दिया। आप (सलललाहु अलैहि व सललम) ने स्वीकार किया और निकाह हो गया। उस समय आप (सलललाहु अलैहि व सललम) की आयु २५ वर्ष और हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) की आयु ४० वर्ष थी इस प्रकार हज़रत ख़दीजा सारे मुसलमानों की माता बन गई।

जब आप (सलललाहु अलैहि व सललम) ४० वर्ष के हुए तो आप पर अल्लाह की ओर से वह्य (ईशावाणी) आना आरंभ हुई और आप (सलललाहु अलैहि व सललम) ने उसे लोगों तक पहुंचाना आरंभ किया। फिरिश्तों में सबसे उत्तम

फिरिश्ते जिब्रील अलैहिस्सलाम, अल्लाह की ओर से सम्मान प्राप्त अन्तिम तथा सब से उत्तम नबी हज़रत मुहम्मद (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) को वह्य पहुंचाते थे। फिर आप (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) उसे याद कर लेते, कुछ सहाबा को लिखा देते जिसे सहाबा (रज़ि०) याद भी कर लेते। इसी को कुर्�आन कहते हैं जो २३ वर्ष में पूरा हुआ। जो किताब के रूप में लिख भी लिया गया और सीनों में सुरक्षित भी कर लिया गया।

पवित्र कुर्�आन अरबी भाषा में है जिस में अल्लाह तआला ने अपने भक्तों को आदेश भेजे हैं। पवित्र कुर्�आन में बहुत सी सीख पूर्ण कहानियां भी हैं और आखिरत (परलोक) की चीज़ों का बयान भी है। अल्लाह के रसूल (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) ने कुर्�आनी आदेश अपने सहाबा (रज़ि०) को समझा भी दिये और उन पर चल कर दिखला भी दिया। पवित्र कुर्�आन को समझाने या आखिरत की बातों को बयान करने या हराम व हलाल (अवैध तथा वैध) को स्पष्ट करने और जीवन यापन के विस्तार में जो कुछ कहा या अमल (कर्म) कर के दिखाया उन सब बातों को ज़बानी याद कर लिया गया या किताबों में सुरक्षित कर लिया गया उन सब को हडीस कहते हैं। तात्पर्य यह कि कुर्�आन जो आप पर उत्तरा और हडीस जो आप के कथन या कर्म से प्राप्त हुई इसी कुर्�आन और हडीस को मान लेने का नाम ईमान है।

आप (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) ने २३ वर्ष तक दीन का प्रसारण किया। बड़ी बड़ी कठिनाइयां सामने आईं। राह में कांटे डाले गये। पत्थरों से मार कर ज़ख़्मी किया गया यहां तक कि क़त्ल के इरादे से घर घेर लिया गया अल्लाह के आदेश से आप अपना घर छोड़ मदीना तथ्यिबा चले गये परन्तु दीन पर जमे रहे और दीन फैलाते रहे और जब अल्लाह के हुक्म से इस्लाम पूरा हो गया और अल्लाह के बन्दों तक पहुंच गया तो अल्लाह तआला का फैसला आया और ६३ वर्ष की आयु में १२ रबीउलअब्द खुमार दो आप (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) ने देह त्याग दिया।

सहाब—ए—किराम ने आप (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) को नहलाया, कफ़नाया और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अ॑न्हा के कमरे में अलग अलग जनाज़े की नमाज़ पढ़ी और वहीं दफ़ن कर दिया। सहाब—ए—किराम को आप (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) के वियोग का ऐसा दुख हुआ कि इस दुख से किसी दुख की तुलना नहीं की जा सकती। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि १२ रबीउलअब्द पीर का दिन आप (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) के जन्म का भी दिन है जो बड़ी खुशी का दिन है और यही तारीख और दिन आप के देहान्त का भी दिन है जो बड़े दुख तथा शोक का दिन है। हो सकता है यह इसलिए हुआ हो ताकि उसदिन न हद से बड़ी खुशी मनाई जाए न हद से बड़ा शोक मनाया जाए।

निःसन्देह आप (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) पर मृत्यु आई और आप (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) के पवित्र शरीर को कब्र में छुपा दिया गया लेकिन अल्लाह तआला ने आप (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) को एक विशेष जीवन प्रदान किया है। आप (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) अपनी समाधि में जीवित हैं परन्तु हम लोग आप (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) के जीवन से अवगत नहीं हैं। रबीउलअब्द के महीने में आप (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) के जन्म की खुशी में जिस प्रकार अपव्यय (फुजूल खर्ची) वाले जल्से जुलूस किये जाते हैं सहाबा काल में यह नहीं थे और सत्य यह है कि इन जल्से जुलूसों को हुजूर (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) और सहाब—ए—किराम देखते तो अप्रियता प्रकट करते अतः इन में संशोधन अनिवार्य है फिर आप (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) के जन्म दिन पर खुशी मनाने के मुकाबले में आप (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) का अनुकरण अति आवश्यक है। हमारे लिये अनिवार्य है कि हम आप (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) की लाई शरीअत को अपने जीवन में जारी करें।

शेख़ सअदी ने क्या खबूब कहा है :

ख़िलाफ़े पयम्बर कसे रह गुज़ीद
कि हर गिज़ ब मंज़िल न ख़वाहद रसीद



कुर्अन की शिक्षा

कर्ज़ —

और खुदा को कर्ज़ हसना दो।
(मुज्जम्मिल : २०)

दुन्या में हमारे साथ कोई इहसान करता है तो हम भी उसके साथ उसी किस्म की भलाई कर देते हैं। लेकिन अल्लाह तआला ने हमारे साथ जो भलाइयां की हैं उनका बदला हम अल्लाह को दे नहीं सकते इसलिए वही सुलूक हम को अल्लाह के बन्दों के साथ करना चाहिए। इसी का नाम अल्लाह को कर्ज़ देना है। ज़ाहिर है कि अल्लाह हमारा मुहताज़ नहीं है कि उसको कर्ज़ दिया जाए। खुदा को कर्ज़ देना यही है कि उसके ज़रूरत मन्द बन्दों को उन के ज़रूरत वाले कामों में मदद दी जाए।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि कियामत के दिन खुदा कहेगा : ऐ आदम के बेटे मैं बीमार पड़ा तू ने मेरी बीमार पुर्सी न की? बन्दा कहेगा ऐ मेरे परवरदिगार तू तो संसार का पालनहार है मैं तेरी बीमार पुर्सी कैसे करता? फरमाएगा कि क्या तुझे खबर न हुई कि मेरा फुलां बन्दा बीमार था तो तू ने उसको न पूछा अगर पूछता तो, तू मुझे उसके पास पाता। फिर खुदा फरमाएगा ऐ आदम के बेटे। मैंने तुझ से खाना मांगा तू ने नहीं खिलाया। बन्दा कहेगा ऐ मेरे परवरदिगार। तू तो सारे जहां का रब है तुझे कैसे खिलाता? फरमाएगा

तुझ को मालूम न हुआ कि तुझ से मेरे फुलां बन्दे ने खाना मांगा तू ने उसे न खिलाया, अगर तू उसे खाना खिलाता तो उसका बदला आज मेरे पास पाता। फिर फरमाएगा ऐ आदम के बेटे मैं ने तुझ से पानी मांगा था तूने मुझे पानी न पिलाया। बन्दा कहेगा ऐ परवरदिगार तू तो सारे संसार का पालनहार मैं तुझे कैसे पानी पिलाता? फरमाएगा मेरे फुलां बन्दे ने तुझ से पानी मांगा था तू ने उसको नहीं पिलाया, अगर तू उस को पिलाता तो आज तू उसको मेरे पास पाता।

कर्ज़ में मुहलत या मुआफ़ी

और अगर (जिस पर कर्ज़ है) उसका हाथ तंग हो तो उसको मुहलत दो जब तक उसका हाथ कुशादा हो (यानी उसके हाथ में पैसा आ जाए) और अगर मुआफ़ कर दो तो तुम्हारे लिए अच्छा है। (बकर : आयत २८०)

ज़रूरत पर लोग एक दूसरे से उधार लेते हैं। लेकिन चाहिए कि आदमी कर्ज़ को जितनी जल्दी हो सके अदा करे। हदीस में है कि तुम में अच्छे वह लोग हैं जो कर्ज़ अदा करने में अच्छे हैं। हज़रत जुबैर जब जंगे जमल में शरीक हुए तो अपने बेटे को बुला कर कहा कि मेरा ख़याल है कि मैं भी आज मज़लूमाना शहीद हूँगा। मुझ को सब से ज़ियादा अपने कर्ज़ की फ़िक्र है। हमारी जायदाद बेचकर सबसे पहले मेरा कर्ज़ अदा करना और अगर मजबूर हो जाना तो हमारे

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी खुदा से मदद चाहना।

सहाब—ए—किराम (रज़ि०) इस कुर्अनी हुक्म के सबब कर्जदारों को मुहलत देते थे। एक शख्स पर हज़रत क़तादा (रज़ि०) का कर्ज आता था, जब आप तकाज़े को जाते तो वह घर में छुप जाते। एक रोज़ आए और बच्चे से पूछा वह कहां हैं? उसने बताया कि घर में खाना खा रहे हैं। बुलाकर पूछा क्यों छुप गये थे? कहा बड़ी तंगी में हूँ मेरे पास कुछ नहीं है। हज़रत क़तादा की आखों में आंसू आ गये और कहा कि रसूलुल्लाह इसलिए वसल्लम ने फरमाया है कि जो शख्स अपने कर्जदार को मुहलत देता है या मुआफ़ कर देता है वह कियामत के दिन अर्श के साथे में होगा।

सहाबा (रज़ि०) न यह कि सिर्फ मुहलत देते थे बल्कि कर्ज़ मुआफ़ कर दिया करते थे। एक शख्स पर अबू युस्ख का कर्ज़ था। यह आदमी बहुत तंगदस्त था। हज़रत अबू युस्ख (रज़ि०) ने कहा कि जाओ तुम्हारा कर्ज़ मुआफ़ है।

एक बार एक जनाज़ा आया जिस पर तीन दीनार कर्ज़ था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ने से इन्कार कर दिया तो हज़रत अबू कतादा अन्सारी (रज़ि०) न कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं इस का कर्ज़ अदा कर दूँगा तब आपने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई।

ट्यारै नबी की ट्यारै बारे

करीबी पड़ोसी ज्यादा हक़दार है —

२६३. हज़रत आइशा (रजि०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) से अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मेरे दो पड़ोसी हैं किसको मैं तुहफा भेजूँ? आप (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) ने फ़रमाया जिस का दरवाज़ा तुम से क़रीब हो। (बुखारी)
सालन की जियादती से पड़ोसी की मदद —

२६४. हज़रत अबूज़र (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) ने फ़रमाया ऐ अबूज़र जब तुम कोई सालन पकाओ तो शोरबा जियादा कर दिया करो और अपने पड़ोसी का ख्याल रखो। (मुस्लिम)

नेक दोस्त और नेक पड़ोसी अल्लाह की नज़र में पसंदीदा है —

२६५. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रजि०) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया बेहतरीन साथी अल्लाह के नज़दीक वह है जो अपने साथी के लिए बेहतर हो, बेहतरीन पड़ोसी अल्लाह के नज़दीक वह है जो अपने पड़ोसी के लिए बेहतर हो।

(तिर्मिजी)

तक़सीम न होने वाली चीज़ में हक़के शुफ़आ —

२६६. हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) ने हर ऐसी साझे की चीज़ में शुफ़आ का फैसला दिया जिसकी तक़सीम न हुई हो, चाहे वह जानदार

हो या बाग हो वह जब तक अपने शरीक को खबर न कर दे बेचना दुरुस्त नहीं है चाहे वह शरीक खरीदे या वह छोड़ दे। अगर उसने बेच दिया और खबर नहीं की तो वही ज्यादा हक़दार है। (मुस्लिम)

पड़ोसी को भी शुफ़आ का हक़ होता है —

२६७. हज़रत अम्रबिन शुरैद (रजि०) से रिवायत है कि हज़रत मिस्वर बिन मखरिमा (रजि०) तशरीफ लाए और मेरे कंधे पर हाथ रखा, मैं उनके साथ हज़रत सअद (रजि०) के पास गया। हज़रत अबू राफ़े़ (रजि०) ने हज़रत मिस्वर से कहा कि क्या आपने उनसे नहीं कहा कि यह मेरा वह मकान खरीद लें जो उनके घर से मिला हुआ है हज़रत अम्र बिन शुरैद (रजि०) ने कहा मैं चार सौ से ज्यादा नहीं दूंगा, चाहे किस्तवार लें या इकट्ठा ले लें। उन्होंने कहा कि पांच सौ इकट्ठा मिल रहा था मैंने उसको नहीं बेचा अगर मैंने रसूलुल्लाह (صلَّى اللہُ عَلَيْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ) से न सुना होता कि पड़ोसी को शुफ़आ का हक़ होता है तो मैं आपके हाथ न बेचता। (बुखारी)
मेहमान की इज़्ज़त और उसका एहतिराम —

२६८. हज़रत अबू हुरैरा (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो खुदा और आखिरत पर ईमान रखता है उसको चाहिए कि अपने मेहमान की इज़्ज़त करे।

(बुखारी, मुस्लिम)

मौलाना अब्दुलहयी हसनी तीन दिन की मेज़बानी उसका हक़ है —

२६९. हज़रत ख्वैलिद, बिन अम्र (अबू शुरैह कअबी रजि०) से रिवायत है कि मैंने हुजूर सल्ल० से फ़रमाते हुए सुना कि जो शख्स खुदा और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है वह अपने मेहमान का इकराम करे एक दिन एक रात की मेहनत तो खुसूसी एहतिमाम के साथ करे और कुल मेहमानी तीन दिन की है। उसके बाद मेहमान पर जो खर्च हो उसका सदक़: है मेहमान के लिए दुरुस्त नहीं कि वह मेज़बान के यहां रुका रहे यहां तक कि उसके लिए परेशानी का ज़रिया बने।

(बुखारी, मुस्लिम)

भूखे रहकर मेहमान को खिलाना —

२७०. हज़रत अबू हुरैरा (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास एक शख्स हाज़िर हुआ, आप सल्ल० ने फ़रमाया आज रात इस शख्स को कौन मेहमान बनाएगा, हज़रात अन्सार में से एक शख्स ने कहा कि ऐ अल्लाह के नबी मैं मेहमानी करूंगा, और उस शख्स को लेकर कियामगाह गये, और अपनी बीवी से पूछा, तुम्हारे पास कुछ है, बीवी ने जवाब दिया, नहीं केवल बच्चों का खाना है अन्सारी ने कहा बच्चों को किसी चीज़ से बहला दो जब रात का खाना मांगें तो बहला कर सुला दो और जब मेहमान अन्दर दाखिल हो तो चिराग बुझा दो, और

मेहमान पर ऐसा जाहिर करो जैसे हम लोग भी खा रहे हैं।

इस तरह सब लोग बैठ गये और मेहमान ने खाना खा लिया और उन दोनों ने खाली पेट रात गुज़ार दी जब सुबह हुई तो वह अन्सारी (रजि०) खिदमते नबवी (صلوات اللہ علیہ وآلہ وسلم) में हाजिर हुए आप सल्ल० ने उनसे फ़रमाया रात तुम दोनों ने अपने मेहमान के साथ जो सुलूक किया उससे अल्लाह तआला बहुत खुश हुए।

(मुस्लिम बुखारी)

ज़ियादा चीज़ दूसरों को देना—

२७१. हज़रत अबू सईद खुदरी (रजि०) फरमाते हैं कि हम लोग हुजूर सल्ल० के साथ सफर में थे, एक शख्स अपनी सवारी पर आया, और इधर-उधर देखने लगा तो हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया जिस के पास सवारी ज़ियादा हो वह उस को दे दे जिसके पास सवारी नहीं और जिस के पास ज़ादेराह जायद हो, वह उसको दे दे जिस के पास जादे राह नहीं है। हज़रत अबू सईद (रजि०) फ़रमाते हैं कि आप सल्ल० ने इस तरह से बहुत से मालों का ज़िक्र किया, हम लोग यह समझे कि ज़ायद मालों में हम लोगों का कोई हक़ नहीं है।

(मुस्लिम)

एक दिन की मेहमानी फर्ज है—

२७२. हज़रत मिकदाम बिन मअदीकरिब (रजि०) से रिवायत है कि हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया मेहमान की रात भर की मेहमानी हर मुसलमान पर फर्ज़ है जो उसके दरवाजे पर पहुंच जाए वह उस पर कर्ज़ के समान है (अर्थात् उसकी मेहमानी उस पर ज़रूरी है जिस तरह कर्ज़ की अदायगी) चाहे उसको पूरा करे और चाहे उसको छोड़ दे।

(अबूदाऊद)

२७३. हज़रत मिकदाम (रजि०) से रिवायत है कि जो शख्स भी किसी कौम का मेहमान हो फिर वह महरूम हुआ, उसकी मदद हर मुसलमान पर ज़रूरी है यहां तक कि रात भर की मेहमानी उसकी खेती और माल से बिना इजाज़त ले जा सकता है।

(अबू दाऊद)

दूसरों पर रहम करने वाले ही अल्लाह की रहमत के हक़दार हैं—

२७४. हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया जो लोगों पर रहम न खाएगा अल्लाह उस पर रहम न खाएगा। (बुखारी, मुस्लिम)

२७५. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० को मैंने फ़रमाते हुए सुना (अल्लाह की मख़लूक पर) रहम खाने वाले और (उनके साथ) रहम करने वालों पर अल्लाह की खास रहमत होगी। तुम ज़मीन वाली मख़लूक के साथ रहम का मामला करो, आसमान वाला तुम पर रहम फ़रमाएगा।

(अबू दाऊद)

बद बख्त व बदनसीब रहमत से महरूम—

२७६. हज़रत अबू हुरैरा (रजि०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाहि (सल्ल०) को फ़रमाते हुए सुना है आप फ़रमाते थे, नहीं निकाला जाता रहमत का माद्दा मगर बद बख्त से (अबूदाऊद) रहमत का बदला रहमत—

२७७. हज़रत अबू हुरैरा (रजि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया जो शख्स रहम नहीं करता उस पर रहम नहीं किया जाता।

(बुखारी मुस्लिम)

गुलामों के बारे में नर्मी—

२७८. हज़रत अबू मसऊद (रजि०) से रिवायत है कि मैं एक गुलाम को कोड़े से मार रहा था पीछे से मैंने एक आवाज सुनी कि अबू मसऊद जान लो गुस्सा की वजह से मैं आवाज़ को पहचान न सका (कि यह किस की आवाज़ है) जब वह मुझ से करीब हुए तो देखा कि वह हुजूर सल्ल० हैं आप फरमा रहे थे कि ऐ अबू मसऊद तुम को मालूम हो जाना चाहिए कि तुम जितना इस गुलाम पर कादिर हो उससे जियादा अल्लाह तआला तुम पर कादिर हैं। मैंने कहा, इसके बाद किसी गुलाम को नहीं मारूंगा।

(मुस्लिम, अबूदाऊद)

मार के बदले गुलाम की आज़ादी—

२७६. हज़रत जाजान कुंदी (रजि०) से रिवायत है कि मैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि० के पास आया तो वह अपने गुलाम को आज़ाद कर चुके थे, उन्होंने ज़मीन से लकड़ी या कोई और चीज़ उठाई और फ़रमाया मुझे इतना भी अज़ नहीं मिला, मैंने रसूलुल्लाहि (صلوات اللہ علیہ وآلہ وسلم) को फ़रमाते हुए सुना है कि जिस शख्स ने (अपने) किसी गुलाम को झापड़ रसीद किया या उसको मारा तो उसका कफ़ारा यही है कि वह उसको आज़ाद कर दे। (मुस्लिम, अबूदाऊद) अनुवाद : मुहम्मद सरवर फ़ारुकी नदवी

(पृष्ठ १५ का शेष)

दुआ वह खेती है कि जिस पर ख़िलाफ़ हवा का गुज़र नहीं। दुआ वह बाग़ है जिसका हर फल मीठा और स्वादिष्ट है। दुआ हर मर्ज की दवा है। शर्त यह है कि दुआ मांगो और आशावान रहो और देर होने पर घबरा के दुआ करना न छोड़ो। जब ऐसी आशा रखोगी तो जरूर पाओगी। (समाप्त)

प्रस्तुति तथा अनुवाद : मो० हसन अंसारी
सच्चा राही मई 2004

इस्लाम में ज्ञानविद्या की प्रतिष्ठा

इन्सान खुदा का नाइब और खलीफ़ा है

इस्लाम में यह बताया गया है कि इन्सान दुनिया में खुदा का नाइब है, और दुनिया का ट्रस्टी है, दुनिया एक वक़्फ़ (ईश्वरार्पण) है और इन्सान उसका मुतवल्ली (अधिवक्ता) उसके जिम्मे यहाँ की व्यवस्था और सन्मार्ग दिखाने का काम है दुनिया में छोटे-छोटे बहुत से ट्रस्ट होते हैं। यह दुनिया, यह सृष्टि एक विशाल ट्रस्ट है। यह किसी की जाती सम्पत्ति या किसी के बाप दादा की जायदाद नहीं। कि जिस तरह चाहे खाये उड़ाये। इस ट्रस्ट में जानवर, पशु-पक्षी, वृक्ष, नदी, पर्वत, सोना, चांदी खाद्यान्न और दुनिया की तमाम नेअमतें हैं।

यह सब इन्सान के हवाले की गयी हैं क्योंकि वह इनके मिजाज से भी परिचित है और उनका हमदर्द भी। मानव स्वयं इसी ट्रस्ट की मिट्टी से बना है, और इसी मिट्टी का है और किसी व्यवस्थापक के लिए ज्ञान व हमदर्दी (सहानुभूति) व लगाव दोनों शर्त हैं। इन्सान, दुनिया के नफ़ा-नुक़सान से भी परिचित है और उसके अन्दर उसकी आवश्यकताएं भी रखी गई हैं। इसलिए वह अच्छा ट्रस्टी बन सकता है।

उदाहरण के लिए पुस्तकालय की व्यवस्था वही अच्छा कर सकता है जिसके ज्ञान की प्रति रुचि हो और पुस्तकों से लगाव और दिलचस्पी हो।

यदि पुस्तकालय की व्यवस्था किसी जाहिल के सुपुर्द कर दी गयी है, तो वह चाहे कितना ही शरीफ और अच्छा आदमी हो वह बेहतरीन लाईब्रेरियन नहीं बन सकता। किन्तु जिसको ज्ञान का शौक होगा और किताबों से लगाव होगा वह पुस्तकालय में पर्याप्त समय लगायेगा, उसका संवधन करेगा और उसको तरक्की देगा।

इसी प्रकार मानव चूंकि इसी दुनिया का है। उसको इससे दिलचस्पी भी है और वह इसका जरूरतमन्द भी है, इस का जानकार भी है और इसका हमदर्द भी। उसको इसी में रहना भी है और इसी में मरना भी, अतएव वह इसकी पूरी देखभाल करेगा और ईश्वर के दिये हुए वरदानों को ठिकाने लगायेगा। इसके अलावा कोई दूसरा इस काम को भली प्रकार नहीं कर सकता।

संसार की व्यवस्था के लिए मनुष्य ही उपयुक्त है। जब हज़रत आदम को अल्लाह ने पैदा किया और धरती पर अपना नाइब बनाया, फिरिश्ते जो न पाप करते हैं न पाप की इच्छा रखते हैं वे बोले, हे प्रभु आप ऐसे को अपना नाइब बना रहे हैं जो दुनिया में खून खराबा करेगा। हम तेरी वन्दना करते हैं और तेरी उपासना में व्यस्त रहते हैं। यह खिदमत भी हम अंजाम दे सकते हैं। खुदा ने जवाब दिया कि तुम इस बात को नहीं जानते हो। खुदा ने आदम और फिरिश्तों की परीक्षा ली।

मौ० सैयद अबुल हसन अली नदवी चूंकि आदम इसी मिट्टी के थे उनकी प्रवृत्ति इस धरती के अनुरूप थी, फिर अल्लाह तआला ने तो उनको सिखा भी दिया था इस लिए वह इसकी एक एक चीज़ के जानकार थे उन्होंने ठीक ठीक उत्तर दिया। फिरिश्तों को इन चीजों का ज्ञान न था इसलिए उत्तर न दे सके। इस प्रकार खुदा ने दिखा दिया कि दुनिया की व्यवस्था और इस ट्रस्ट की ट्रस्टी के लिए, अपनी सारी कमज़ोरियों के बावजूद मानव ही उपयुक्त है, बल्कि यह कमज़ोरियों और ज़रूरतें ही उसको इस मन्सब के योग्य सिद्ध करती हैं। यदि इस दुनिया में फिरिश्ते होते तो दुनिया की अधिकांश नेअमतें बेकार सिद्ध होतीं और उनका विकास न होता।

सफल कार्यवाहक और प्रभारी

लेकिन यह भी याद रखना चाहिए कि नाइब और कार्य-वाहक का कर्तव्य है कि कार्यवाहक बनाने वाले की पूरी पूरी पैरवी करे। वह इसके आचरण का नमूना और प्रतिबिम्ब है। यदि मैं यहाँ किसी का प्रभारी हूं तब सफल और स्वामिभक्त प्रभारी उसी समय कहलाऊंगा जब अपनी क्षमता भर उसकी नकल करूं और अपने अन्दर उसका आचरण पैदा करूं। अल्लाह की नाइबी यह कहती है कि अपने अन्दर उसके गुणों को उतारा जाये। हमें बतलाया गया है कि ज्ञान, दया, आभार, व्यवस्था, पवित्रता, क्षमा, उपकार, न्याय, सुरक्षा व संरक्षण, प्रेम,

- शौर्य व सुन्दरता, अपराधियों की पकड़
- व्यापकता व विशालता ईश्वरीय गुण हैं।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लूलूह ने मनुष्य को शिक्षा दी कि ईश्वर के गुणों को अपनाओ। मानव अपनी सीमित परिधि में और तमाम कमज़ोरियों के साथ ईश्वरी गुणों की छाया अपने अन्दर पैदा कर सकता है। वह कभी खुदा नहीं हो सकता लेकिन दुनिया में ईश्वर के गुणों का प्रदर्शन कर सकता है और यही एक सच्चे नाइब का काम है। आप अनुमान लगा सकते हैं कि यदि मानव सच्चे दिल से अपने को अल्लाह का नाइब समझने लगे और इसके अनुसार आचार—व्यवहार करने लगे तो स्वयं उसकी और दुनिया की खुशहाली का क्या हाल होगा। मज़हब इन्सान को खुदाका नाइब और इस धरती की व्यवस्था में उसका काइम मुकाम (प्रभारी) और इसविशाल ट्रस्ट का ट्रस्टी करार देता है। इससे बढ़कर मनुष्य की प्रतिष्ठा और मानवता की उठान नहीं हो सकती।

दो विरोधी परिकल्पनाएं

किन्तु मानव ने स्वयं को दो विरोधी परिकल्पनाएं स्थापित कीं। कहीं तो इन्सान को खुदा बनाया गया और उसकी अ़िबादत होने लगी और कहीं जानवर से बदतर समझ लिया गया और उसको गाय, बैल की तरह हँकाया जाने लगा। कुछ इन्सान स्वयं खुदा बन बैठे और कुछ अपने को जानवर से बदतर समझने लगे। वह समझते हैं कि हम को केवल पेट भरने से काम है। यह दोनों परिकल्पनाएं गलत हैं। न इन्सान खुदा है न जानवर। इन्सान, इन्सान ही है लेकिन खुदा का नाइब

है। सारी दुनिया उसके लिए पैदा की गई है और वह इबादत के लिए पैदा किया गया है। यह धरती यह दुनिया किसी की जाती जायदाद नहीं, एक ट्रस्ट और इन्सान उसका ट्रस्टी। इस परिकल्पना और विश्वास के बिना दुनिया की चूल ठीक से नहीं बैठ सकती। इतिहास गवाह है कि जब मनुष्य इस सीधे रास्ते से हटा और हद से बढ़ा और खुदा बनने का प्रयास किया और अपने को दुनिया का असली मालिक समझा अथवा अपनी प्रतिष्ठा से गिरा और अपने को जानवर समझा अथवा दुनिया की ट्रस्टशिप छोड़ दी और जीवन की जिम्मेदारियों से बचना चाहा तो स्वयं भी बरबाद हुआ और यह दुनिया भी तबाह हुई।

प्रेम और भाईचारे का सन्देश

अल्लाह फरमाता है, “अपने पर उस एहसान को याद करो जब तुम एक दूसरे के दुश्मन थे एक दूसरे के खून के प्यासे थे, एक दूसरे का मुँह देखने को तैयार नहीं थे, उसकी कृपा से आपस में भाई भाई बन गये। अल्लाह ने दिलों को मिला दिया।” यह आयत एक घटना से सम्बन्धित है। जब मक्के में अल्लाह के रसूल और मुसलमानों को खुदा की बन्दगी और अ़िबादत मुश्किल हो गई और वहां के लोगों ने अपनी नामसङ्गी से इस बात को नहीं समझा कि यह हमारा भला चाहते हैं और हमें गर्त से निकाल कर ऐसी कौम बनाना चाहते हैं कि जिससे सारी दुनिया में रोशनी फैले। सारी दुनिया में प्रेम और भाईचारा फैले, आपस में झगड़े समाप्त हों, लोगों को जीवन के लक्ष्य मालूम हो जायें, अल्लाह ने हमें जो क्षमताएं दी हैं उसका सदुपयोग हो,

जो क्षमताएं छोटी छोटी मामूली बातों से नष्ट हो रही हैं, बुराइयां आम हो रही हैं, ऐसी घटनाएं घट रही हैं जिनसे खुदा नाराज होता है और रुठ जाता है उसका अभिशाप भड़कता है। इस्लाम यह चाहता है कि उनको गर्त से निकाल कर ऊंचा उठाये। लेकिन मक्का के लोग इसे नहीं समझे। उनके अन्दर यह भावना काम कर रही थी कि अमुक वंशज, अमुक घराने का कोई व्यक्ति इतना बढ़ जाये। जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके साथियों का मक्के में जीना दूभर हो गया तो उन्हें अपने प्रिय वतन को छोड़ देना पड़ा।

औस व ख़ज़रज की लड़ाई

पैग म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और उनके अनुयायी जब मक्का छोड़कर मदीना आये तो यहां एक दूसरी मुसीबत थी। यहां तो बिरादरियां थीं और दोनों अरब के थे। मगर बहुत दिनों से उनमें दुश्मनी थी। हर बिरादरी अपनी अच्छाई और दूसरे की बुराई बयान करती। जब कोई महान लक्ष्य सामने नहीं होता तो छोटी छोटी बातों में लड़ाईयां होती हैं, मुकदमे चलते हैं, विरोध होता है, मैं ज़मीदार खानदान का व्यक्ति हूँ, मेरे ननिहाल की बड़े जमीदारों में गिनती थी, हमारे अ़िलाके में ज़मीदारी के दिनों में छोटी-छोटी बातों में लड़ाई होती, किसी बबूल के वृक्ष, हदबन्दी या दो खेतों के बीच में भ पर या यह कि मैं गुजर रहा था अमुक ने सलाम नहीं किया बस लड़ाई छिड़ जाती, बाई काट होता, बच्चों को निर्देश दिया जाता कि अमुक के घर न जाएं, बच्चे इन बातों को क्या समझते, उन्हें खेल मिला देता।

चाहिए तो यह था कि ज्ञान सब को मिलाये, लेकिन आज की दुनिया में खेल मिलाता है, एक देश की टीमें दूसरे देश जाती हैं सब मिल जुलकर खेलते हैं, बड़े दुःख की बात है कि ज्ञान न मिलाये और खेल मिलाये।

जब कोई बड़ा लक्ष्य सामने नहीं होता, मानव संसार में जो आग लगी हुई है, जो बुराई व्याप्त है, ईश्वर के प्रकोप को भड़काने वाली मानवता को रौंदने वाली जो घटनाएं घटित हो रही हैं उनका दर्द व एहसास जब नहीं रहता तो बच्चों की तरह खेल तमाशों में जी लगता है अथवा छोटी-छोटी बातों को तूल देने लगते हैं जिन पर दुख भी होता है और हँसी भी आती है।

मदीना वालों का भी पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आगमन से पूर्व यही हाल था। औस व खज़रज के लोग आपस में ऐसे लड़ते थे कि एक दूसरे के खून से प्यास बुझाते थे यह भावना उनमें वर्षों से थी। जब अल्लाह के रसूल सल्ल० और उनके साथी मदीना पहुंचे तो उनके सामने बड़ा लक्ष्य आया, बड़े रहस्य खुले और उनकी काया पलट गई। अब वह आपस में घुल मिल गये, एक जान व एक दिल हो गये, उन्होंने पुरानी बातों को बिल्कुल भुला दिया, कटुता दूर हो गयी। मदीना में आबाद यहूदियों को यह पसन्द नहीं था, उन्होंने लड़ाने की बहुत कोशिश की लेकिन औस व खज़रज का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अल्लाह के रसूल के प्रति अनुराग ने उनकी अदावतों को धो दिया था और उनका अपना बीता हुआ समय ऐसा घृणित लगने लगा

जिसे सोचकर उनके रोंगटे खड़े हो जाते थे। जब कोई बड़ा लक्ष्य जैसे परहित, सेवा भाव, अल्लाह को अपना बनाने, लोगों का दुःख दर्द दूर करने की भावना सामने हो तो छोटी छोटी बातें ऐसी तुच्छ मअलूम होती हैं कि उनको सोचकर मतली (मिचली) आती है। एक अंसारी और मुहाजिरी के बीच एक कुएं पर लड़ाई हो गई, एक ने अपने कबीले को आवाज़ दी दूसरे ने अपने हिमायतियों को दुहाई दी। तो हुजूर ने फ़रमाया छोड़ो यह बड़ी ज़लील हरकत है। हमारे नबी सल्ल० की शिक्षा दीक्षा से संसार व मुहाजिरीन में ऐसा क्रान्तिकारी परिवर्तन आया कि युद्ध क्षेत्र में घायल हैं दम निकलने को है, प्यास लगी है, पानी आता है तो दूसरे घायल की ओर संकेत करके उसे पहले पिलाने पर बल देते हैं। त्याग की यह भावना इस्लाम से रिश्ते, लक्ष्य से लगन और नबी के प्रति अगाध प्रेम व श्रद्धा ने पैदा किया था। इन पर परहित का ऐसा नशा छा गया कि मदीने के अन्सार ने मक्के के मुहाजिरों को अपनी दुकान, अपने खेत अपनी जायदाद, में बराबर का शरीक किया।

(पृष्ठ १३ का शोष)

मंडल के प्रमुख सदस्य थे। उनका पहला मुख्य सचिव एक ब्राह्मण खांडेराव थे।

हैदर अली ने मन्दिरों के लिए बड़ी बड़ी सम्पत्तियां दीं। उसकी सरकार की ओर से नकद रक्में और तोहफे भी दिए जाते। जिनके प्रमाण पत्र अब भी बहुत से मन्दिरों में सुरक्षित हैं, जिस में से कुछ इस प्रकार हैं :

१. दीवान हिली के मन्दिर में

वह नाकूस (शंख) मौजूद है जो नवाब हैदर अली ने भेंट किया था।

२. श्रंगापट्टम के श्री रंग नाथ मन्दिर में जो बड़े कढ़ाव आदि हैं, वे नवाब हैदर अली के दिए हुए हैं।

३. श्रीनगर के मन्दिर में नवाब हैदर अली के लिखे हुए तीन प्रमाण-पत्र सुरक्षित हैं, उनमें से एक वह पत्र है जो हैदर अली ने १७६६ ई० में वहां के गुरु के नाम लिखा था।

नवाब हैदर अली पड़ा लिखा न था, लेकिन तत्वदर्शिता व सूझ बूझ उसकी रग रग में मौजूद थी। उसके कुछ कथन यहां प्रस्तुत किए जाते हैं।

१. एक बहादुर आदमी जंग के मैदान में बे सर शरीर का उछलना देख कर 'रक्से बिस्मिल' का आनन्द प्राप्त कर सकता है।

२. वीर पुरुष को तोप व बन्दूक की घन गरज संगीत से अधिक आनन्द देती है।

३. मर्दों की सबसे अच्छी बैठक घोड़े की पीठ है।

४. जंग जीत लेने में जो आनन्द है वह किसी उत्सव से नहीं मिल सकता।

५. मेरा पैगम्बर भी उम्मी (बे पड़ा लिखा) था और मैं भी। यह खुदा की कुदरत का एक साधारण सा नमूना है कि मुझे ऐसे अज्ञानी से ऐसे बड़े बड़े कारनामे हो गए जो हजारों ज्ञानियों से भी नहीं हुए।

६. यदि मुझे अपने जैसा एक और व्यक्ति मिल जाए तो सातों महाद्वीप फ़तह कर डालूं और दुनिया को फिर हज़रत उमर रज़ि० की फुतूहात का नकशा दिखा सकूं।

सियार की भाँति जीने से शेर की भाँति मरना अच्छा है।

प्रजा के साथ सहानुभूति

मुसलमान शासकों ने सदैव ही प्रजा के दुख, सुख और सभी नागरिकों के साथ हमदर्दी, सहानुभूति और सहयोग के असंख्य उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। खिलाफ़ते राशिदा और तुरन्त बाद के काल की कुछ घटनाएं आप पढ़ चुके हैं। इन पंक्तियों में उन मुस्लिम शासकों की कुछ घटनाएं प्रस्तुत की जाएंगी जो इस्लाम के आरम्भिक काल के काफी बाद और इस्लाम के केन्द्र से हजारों मील दूर आबाद थे।

सुलतान महमूद ग़ज़नवी रहम० का शासन है, उसका एक शाही कर्मचारी जो हाजिब के पद पर था, तकीनाबाद से राजधानी ग़ज़नी के लिए चला। जब वह खुसरू आबाद पहुंचा, तो उसे सामान ले जाने के लिए खच्चर की ज़रूरत पड़ी। उसके नौकर एक गरीब आदमी का खच्चर पकड़ लाए और उस पर सामान लाद कर चल दिए। किसी सूत्र से सुलतान महमूद ग़ज़नवी रहम० को इस घटना का पता चल गया। वह बड़ा नाराज़ हुआ और उसने हाजिबों के सरदार को बुला भेजा। वह हाजिब भी दरबार में पहुंच गया। सुलतान ने हाजिबों के सरदार से कहा कि इस हाजिब से मालूम करो कि इसने मेरी प्रजा के मवेशी को पकड़ने का साहस कैसे किया? हुक्म दिया कि इसी समय सिपाहियों से कहो कि इसे पकड़कर खुसरूआबाद ले जाएं और इसके अपराध की घोषणा करें, फिर इसी की तलवार से इसके दो टुकड़े

कर दें और लोगों के सचेत करने के लिए लाश वहीं छोड़ दें।

हिन्दुस्तान के इलाके मालवा और मान्डो के तख्त पर सुलतान मुहम्मद खिलजी बैठा। यह बड़ा ही न्याय प्रिय, सादा स्वभाव, दयालु तथा दानवीर बादशाह था। उसने मुसलमानों और हिन्दुओं के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार किया। इसलिए उसकी प्रजा उससे बहुत प्रसन्न और सन्तुष्ट थी। उसके राज्य में चोर जैसे शब्द से कोई परिचित नहीं था। यदि किसी व्यापारी या ऐलची का माल चोरी हो जाता और चोर न पकड़ा जाता तो सुलतान अपने खजाने से उसकी पत्तिपूर्ति कर देता। जिस अधिकारी की लापरवाही या भूल से चोरी होती उससे वह रकम दंड स्वरूप वसूल की जाती। यही कारण था कि लोग बड़ी सुख शान्ति के साथ अपना जीवन गुज़ारते। जंगलों में और वीरानों में सफ़र करने वाला किसी प्रकार का भय महसूस न करता। जानवरों तक से प्रजा की रक्षा की व्यवस्था की गयी। बताया गया है कि एक बार शेर ने किसी मुसाफ़िर को मार डाला। उसकी पत्नी व बच्चों ने सुलतान मुहम्मद खिलजी से फ़रयाद की। सुलतान ने हुक्म दिया कि सलतनत में घोषणा कर दी जाए कि कहीं कोई नर शेर रहने न पाए। इस घोषणा के बाद काफी समय तक मालवा और मान्डों में किसी ने कोई शेर या दरिन्दा नहीं देखा।

डॉ० मुहम्मद इजितबा नदवी

हिन्दुस्तान पर सिकन्दर लोधी का शासन है। उसका मंत्री अमीर सय्यद खां प्रजा की देख भाल और रक्षा पर नियुक्त है। वह सलतनत के विभिन्न क्षेत्रों में दौरे करके और अपने कारिन्दे भेजकर राज्य की देख भाल कराता रहता है और हर ज़रूरत मन्द व मुहताज़ की ज़रूरत पूरी करता रहता है। एक दिन शिकार के लिए निकला। शिकारगाह पहुंचा तो एक किसान ने दही की हाँड़ी पेश की। सय्यद खां ने दही के बदले पूरी हाँड़ी अशरफियों से भर दी।

चुन्देरी की एक महिला ने सय्यद खां की सेवा में नीम की पत्तियों से भरा हुआ बर्तन पेश किया। पत्तियां हरी भरी थीं। सय्यद खां ने नीम की पत्तियां देखकर उस महिला से पूछा कि ये नीम की पत्तियां क्यों लाई हो? उसने जवाब दिया कि मैंने इन पत्तियों का साग इस तरह पकाया है कि इनकी शक्ल में कोई परितर्वन नहीं आने दिया मगर कड़वाहट समाप्त हो गई। अमीर ने एक नौकर से उसे चखने के लिए कहा। उसने चखा—तो पत्तियां बड़ी स्वादिष्ट लगीं। नीम की कड़वाहट बिल्कुल न थी। अमीर ने उस महिला के बर्तन को अशरफियों से भर दिया।

इसी अमीर सय्यद खां को एक दिन तीन जवाहरात पेश किए गए। एक की कीमत सात लाख, दूसरे की कीमत पांच लाख और तीसरे की कीमत तीन लाख थी। सैयद खां ने अपने

पास बैठे हुए नौकर से कहा कि सच सच बताओ कि इन तीनों जवाहरात में से तुम्हें कौन सा पसन्द है? जो तुम्हें पसन्द होगा उसे तुम्हें दे दूँगा। उसने कहा अमीर साहब, सच्ची बात तो यह है कि कोई भी पसन्द नहीं। अमीर ने उससे कहा कि एक बार फिर अच्छी तरह देख कर कोई पसन्द करो। उसने जवाब दिया तीन लाख की कीमत वाला हीरा मुझे पसन्द है।

सच्चद खां ने हँसते हुए कहा सबसे अधिक कीमत वाले जवाहर को छोड़कर तुमने सबसे कम कीमत का हीरा पसन्द किया है। कम कीमत वाला हीरा तुम को पसन्द है और सबसे अधिक कीमत वाला मुझको पसन्द है, अब एक रह जाता है तो फिर तीनों तुम्हें ही दिए देता हूँ जैसे चाहो खर्च करो।

हिन्दुस्तान में मुस्लिम शासन के कई दौर आए। खानदानी बादशाहत के अलावा भी कभी कोई बहादुर और न्यायप्रिय व्यक्ति सैनिक अधिकारियों और सरदारों की इच्छा पर शासक बना। उन्हीं में से एक बादशाह शेर खां था, जो शेर शाह सूरी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अफगानों ने आम सहमति से उसे अपना बादशाह बना लिया था। उसने प्रजा के सुख, आराम व राहत के लिए बड़े बड़े कार्य किए। शासन संभालते ही अपने साथियों को उचित पदों पर नियुक्त किया उसके बाद आदेश दिया कि हर मन्जिल पर मुसाफिरों के ठहरने के लिए पक्के घर बनाए जाएं, जिन में मुसाफिरों के सोने, रहने की सुहूलतें हों। घर के अतिरिक्त एक मस्जिद और एक कुंआ भी हो। उन मुसाफिर खानों के लिए अलग

बजट बनाकर धन निर्धारित किया गया। एक पदाधिकारी को उन सब का उच्च प्रबन्ध नियुक्त किया गया। मेहमान घर के एक दरवाजे पर हिन्दुओं के लिए पानी और दूसरे पर मुसलमानों के लिए पानी से भरे हुए घड़ों और खाने पीने की सामग्री का प्रबन्ध रहता। दोनों के लिए अलग—अलग रसोई और खाना पकाने वाले हर समय मौजूद रहते। मस्जिदों में इमाम व कारी भी नियुक्त किए गए। सबके वजीफे सरकारी कोष से दिए जाते थे। किसी मुसाफिर से न कोई किराया लिया जाता और न किसी और नाम से कोई दूसरी रकम ली जाती थी न कोई सेवा ली जाती थी। शेर शाह के राज में रास्ते अत्यन्त सुरक्षित थे। एक बुढ़िया सोने की टोकरी लेकर जंगल में रह जाती, तो उसे किसी रक्षक और पहरे दार की आवश्यकता न होती। न कहीं चोरी होती थी न लूटमार या डाके पड़ते थे। यदि कहीं कोई घटना इस प्रकार की हो जाती तो इलाके का अफसर उस क्षेत्र के हर व्यक्ति से सामान का मूल्य वसूल कर लेता। इस कारण सब लोग यही प्रयास करते कि चोरी होने ही न पाए और यदि चोरी हो जाती तो वे चोर का पता लगा लेते।

शेरशाह सूरी ने लंगर खाना स्थापित कर रखा था। जिसमें वह रोजाना पांच तोला सोना गरीबों व दीन दरिद्रों के लिए भिजवाया करता था। उसका अपना एक बहुत बड़ा रसोई घर था जिसमें रोजाना हजारों आदमी खाया करते थे। उसका यह सामान्य आदेश था जिस समय जो भी खाना चाहे तो उसे शाही रसोई से खाना खिलाया जाए। स्वयं शेरशाह विद्वानों

व मशाइख के साथ खाना खाता था। अन्त में सुलतान शमसुद्दीन अलतमिश की यह घटना भी पढ़ते चलिए: सुलतान अलतमिश काजी हमीदुद्दीन नागौरी की सेवा में हाजिर हुआ। उन्होंने सुलतान को सम्बोधित करके कहा: शमसुद्दीन तुम फ़कीरों, गरीबों और मिसकीनों और दरवेशों के साथ सद-व्यवहार करो, उनके साथ भलाई करो। खुदा के बन्दों के साथ अच्छा बरताव करो। प्रजा को सुख शान्ति प्रदान करो। जो अपनी प्रजा के साथ अच्छा व्यवहार करता है और लोगों के साथ भला व्यवहार करता है, अल्लाह उसको लम्बी आयु प्रदान करता है। उसको दुश्मनों के फिलों व हमलों से बचाता है। सुलतान शमसुद्दीन ने इन उपदेशों को बड़े ध्यान से सुना और इन पर सारी उम्र अमल करता रहा। न्याय व राष्ट्र के लिए महा कारनामे

हिन्द व पाक उप महाद्वीप के दक्षिणी क्षेत्र में इस्लाम का प्रकाश सबसे पहले पहुँचा। मालाबार में अरब व्यापारियों के आगमन और मेल जोल से इस्लाम फैलने लगा। इसका प्रभाव आस, पास के क्षेत्रों में भी पड़ा। आज भी उसके प्रत्यक्ष प्रमाण मिलते हैं। इसी के साथ यह भी एक ऐतिहासिक सत्य है कि यूरोपी वासियों ने अपना भाग्य आज़माने के लिए और कुछ ऐसे लोगों ने भी जो समाज में ग़ज़ब़ी पैदा करते हैं, उक्त क्षेत्र में अपने कदम जमाए। पुर्तगाली, फ्रांसीसी और अन्त में अंग्रेजों ने शक्ति प्राप्त कर के राज काज में दखल देना शुरू किया। इस कार्य में उनके क्षेत्र के मुसलमान शासकों और मुजाहिदों से कड़े मुकाबले का

सामना करना पड़ा। १८वीं सदी के आरम्भ में एक वीर साहसी मुसलमान मुजाहिद नवाब हैदर अली खां ने उनको निरंतर शिक्ष्य पर शिक्ष्य दी और बार बार वे हार व अपमान से दो चार हुए। यदि अपनों ही ने गद्दारी और विश्वासघात न किया होता तो हिन्दुस्तान के इतिहास में अंग्रेजी साम्राज्य का उल्लेख ही न मिलता और आज उसकी कुछ और ही तस्वीर होती।

नवाब हैदर अली खां के शासन से सम्बन्धित कुछ बातें यहां प्रस्तुत की जाती हैं। नवाब हैदर अली एक अत्यन्त चतुर राजनेता और योग्य शासक था। वह शासन की पूरी व्यवस्था में सिद्धस्त थे। अपने राज्य के ही नहीं पूरे भारत के नागरिकों की इतनी अधिक चिन्ता रहती थी कि रातों को भेस बदलकर सामान्य लोगों की हालत मालूम करने निकलते। पीड़ितों और ज़रूरतमन्दों को अनुमति दे रखी थी कि यदि अधिकारियों और राज्य के अन्य कारिन्दों से उनको न्याय न मिले और वे सन्तुष्ट न हो तो दरबार में आकार अपनी पीड़ा बयान कर सकते हैं।

अंग्रेज इतिहासकार इस बात को मानते हैं कि हैदर अली के शासन में पुलिस की व्यवस्था उच्च कोटि की थी और कर वसूल करने में प्रजा पर कोई अत्याचार नहीं किया जाता था, बल्कि अत्याचारी और घूसखोर अधिकारियों को कोड़े लगवाए जाते थे। सेना का संगठन एवं प्रशिक्षण भी बहुत उचित कोटि का था। हैदर अली की सैनिक व्यवस्था पर पूरी पकड़ थी। सैनिकों की आवश्यकताओं का वह बहुत ही ध्यान रखता था। उनके लिए अपने आराम को तज देता था। अतः उसकी

सेना का हर सिपाही उसके लिए सदैव जान देने को तैयार रहता था सिपाही की बहादुरी पर उसको इनाम देता था। किसी सामान्य नागरिक की भी वीरता और वफादारी की कोई घटना घट जाती तो उसे भी इनाम दिया जाता था। अतएव इसी सन्दर्भ में यह घटना देखिए।

नवाब हैदर अली की अंग्रेजों से जब पहली जंग हुई तो अंग्रेजों ने किला अरकाट का घेराव कर लिया और सीढ़ियां लगाकर दीवार पर चढ़ने लगे। यहां लशकरे हैदरी की संख्या भी बहुत थोड़ी थी। यह देख कर स्थानीय लोगों ने किले की रक्षा में भरपूर हिस्सा लिया, जिसमें औरतों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। औरतों ने दीवार पर चढ़ने का दुस्साहस करने वाले अंग्रेज सैनिकों पर किले की दीवार से गरम गरम पानी डाला, जिसमें गोबर घुला हुआ था। यह काम उन्होंने इतनी तेजी और फूर्ती से किया कि अंग्रेजों के सिपाही किले पर चढ़ सकने में असमर्थ रहे तथा पीछे हट गये।

नवाब हैदर अली को इसकी रिपोर्ट दी गयी तो उन्होंने अपने योग्य पुत्र टीपू सुलतान के हाथ उन सब औरतों को सोने के कड़े और नकद रूपये इनाम में भिजवाए। किसानों और अन्य पेशे वालों का भी वह सैनिकों की तरह ध्यान रखता और उनको इनाम देता रहता था। उनका उनके कामों में हौसला बढ़ाता था। यदि किसी को किसी से कोई क्षति पहुंचती तो उसकी पूरी पूरी पूर्ती कर दी जाती।

नवाब हैदर अली की न्यायप्रियता की अनेक घटनाएं प्रसिद्ध हैं। वे जैसे बहादुर थे वैसे ही न्याय

प्रिय भी थे। १७६७ई० में वे कोइम्बटूर में मौजूद थे। सुब्ब को टहलने के लिए निकले तो रास्ते में एक बुद्धिया ने रोक कर फरयाद की और कहा मेरे साथ न्याय कीजिए। पूछने पर पता चला कि उसने सरदार हैदर शाह को अपनी प्रार्थना पेश की थी कि नकीबों के सरदार आगा मुहम्मद ने उसकी लड़की उससे छीन ली है, मगर इस बारे में कोई कार्यवाही नहीं हुई। ऐसा लगता है कि नवाब साहब के सामने मेरी अरजी पेश नहीं की गयी। नवाब ने हैदर शाह से पूछा तो उसने कहा बुद्धिया और उसकी लड़की वेश्या हैं इसलिए उसने अरजी पेश करने की ज़रूरत नहीं समझी। नवाब साहब ने इसकी जांच की तो मामला इसके विपरीत निकला। इसकी सजा हैदर अली शाह को मिली। उसको दो सौ कोड़े लगवाए और पद से हटा दिया और आगा मुहम्मद का सर उड़ा दिया गया ताकि आगे किसी व्यक्ति को इस प्रकार अपराध करने का साहस न हो सके। बुद्धिया को उसकी लड़की वापस कर दी गयी साथ ही हैदर अली के आदेश पर उसे बहुत सा धन भी दिया गया।

नवाब हैदर अली की प्रजा में मुसलमानों के अलावा गैर मुस्लिमों की एक बड़ी छुंख्या थी। उनके साथ कोई भेद भाव नहीं होता था। उनके साथ मुसलमानों के समान ही स्नेह और उदारता का व्यवहार किया जाता था। उनके शासन में सरकारी पदों पर न केवल हिन्दू बल्कि फ्रांसीसी और ईसाई भी नियुक्त किए गए। सब के साथ बड़ी दानशीलता का व्यवहार करते थे। किशन राव और पूर्णिया उनके मंत्री

(शेष पृष्ठ १० पर)

हमारे हुँदूर (सल्लल्लाहु अलैहि) आखिरी वक्त में :

नबीये रहमत से माखूज़

हज़रत आइशा व हज़रत इब्नि अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा रिवायत करते हैं कि जब रिह़लत का वक्त क़रीब आया तो एक काली धारीदार चादर आप पर पड़ी हुई थी आप (त्वं सल्लल्लाहु अलैहि) उस को अपने मुबारक चेहरे पर डालते जब तकलीफ होने लगती तो हटा देते इसी हूल में आप ने फ़रमाया “यहूद व नसारा पर खुदा की लानत हो उन्होंने अपने अंबिया की कब्रों को झूबादत गाहें (पूज्य स्थान) बना लिया।” आप मुसलमानों को इस से खबरदार फ़रमा रहे थे ताकि वह यहूद व नसारा की तरह न करें।

आखिरी वसीयत

वफ़ात के क़रीब आप की ज़ियादातर वसीयत यह थी : देखो नमाज का ख़्याल रखना और अपने मातहतों और गुलामों का। यह आप बराबर फ़रमाते रहे यहां तक कि ज़बान से इन अलफ़ाज़ का अदा करना मुश्किल हो गया और मालूम हुआ कि सीन-ए-मुबारक से इन अलफ़ाज़ के अदा करने की कोशिश फ़रमा रहे हैं।

हज़रत अली कर्मल्लाहु वजहू रावी हैं कि “आप ने उस मौके पर नमाज़ और ज़कात और मातहतों के साथ हुस्ने सुलूक (सद्व्यवहार) की वसीयत फ़रमाई।”

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि मैं आप पर मुअव्विज़तैन पढ़ कर दम करने लगी कि आप ने आसमान की तरफ़ निगाह उठाई और फ़रमाया (फ़िरफ़ीक़िल अल्ला, फ़िरफ़ीक़िल अल्ला) (सब से

अल्ला रफ़ीक़ के पास, सब से अल्ला रफ़ीक़ के पास)

उसी वक्त अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र दाखिल हुए उनके हाथ में पीलू की तर व ताजा शाख़ थी आपने उसको एक नज़र देखा। मैंने ख़्याल किया कि शायद आप को इसकी ज़रूरत है चुनांचि मैंने वह उनसे लेकर पत्ते वगैरह झाड़ कर मिस्वाक तैयार की और आप को पेश की, आपने बहुत अच्छे तरीके पर मिस्वाक की जिस तरह आप कभी फ़रमाया करते थे, फिर मुझे वापस करने लगे लेकिन वह आप के हाथ से छूट गयी।

फ़रमाती हैं कि “आप के सामने पानी का कटोरा था, आप अपने हाथ पानी में डालते और चेहरे पर फेर लेते और उसके बाद फ़रमाते “अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं बेशक सकराते मौत (मौत की तकलीफ़) हक़ है। फिर आपने बाईं उंगली ऊपर उठाई और फ़रमाने लगे “फ़िरफ़ीक़िल अल्ला, फ़िरफ़ीक़िल अल्ला (सबसे अल्ला व बरतर रफ़ीक़ के पास) यहां तक कि रुहे मुबारक ने आलमे बाला का रुख किया और आप का हाथ पानी में एक तरफ़ झुक गया।

हज़रत आइशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि जिस वक्त जुदाई की घड़ी क़रीब आई तो उस वक्त आप का सर मेरी रान पर था, थोड़ी देर के लिए आप पर ग़शी (बेहोशी) तारी हुई। फिर आप को होश आ गया और आपने घर की छत की तरफ़ अपनी नज़र उठाई और फ़रमाया अल्लाहु मर्फ़ीक़िल अल्ला

(सबसे अल्ला और बरतर रफ़ीक़ के पास)

आप की वफ़ात दोशंबे के रोज़ १२ रबीउलअब्द ११ हिज्री को ज़वाल के बाद हुई। उस वक्त आप की उम्र शरीफ़ ६३ साल थी। यह मुसलमानों के लिए सब से ज़ियादा तारीक और वहशतनाक दिन, सब से बड़ा सदमा और इब्तिला (इम्तिहान) और पूरी इन्सानियत का सबसे बड़ा सानिहा था। (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअून) सल्लल्लाहु तआला अला मुहम्मदिंब अला आलिही व सहबिही व सल्लम।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करते हैं कि “जिस दिन रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना तशरीफ़ लाये थे तो मदीने की हर चीज़ आप की आमद से रौशन और मुनब्बर हो गई थी, जिस दिन आप की वफ़ात हुई उस दिन उस की हर चीज़ तारीक हो गई।

उम्मे ऐमन भी रो रही थीं लोगों ने सबब पूछा तो उन्होंने जवाब दिया कि बेशक मुझे मालूम था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस दुन्या से तशरीफ़ ले जाएंगे, लेकिन मैं इस बात पर रो रही हूं कि वह्य का सिलसिला हम से हमेशा के लिए मुनक्तिअ हो गया।

अल्लाह के आखिरी रसूल का नाम लेने, सुनने या लिखने पर दुरुद पढ़ना वाजिब है। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

(बच्चियों की तालीम व तर्बियत)

(चौदहवीं)

खेलनिसा 'बेहतर'

दुआ में दुनिया व आखिरत की खूबिया छिपी हैं।

अगर मुसीबत से अमान चाहती हो और खुदा की रजामन्दी की इच्छा है तो दुआ करो। मुसीबत में काम आने वाली और खुदा से मिलाने वाली यही दुआ है। ऐ मेरी बहनो। उस नेमत से महरूम न हो जो दुआ से प्राप्त तस्कीन (सन्तोष) से होती है वह किसी दवा से मुमकिन नहीं। तुम मुझे बताओ "भला वह मजबूर व बेकरार की दुआ को सुनता है और बुराई को दूर करता है। यह कथन किस के बारे में है। खुदा को दुआ से जियादा कोई चीज पसन्द नहीं। क्योंकि दुआ में खुदा की हम्द व सना और बन्दे की आजिज़ी का पूरा पूरा नकशा होता है। कमज़ोर दिल से निकली है मगर आसमान व ज़मीन, अर्श व मलक इस से हिल जाते हैं।

कुर्�আন कहता है :-

तर्जुमः "तुम्हारे रबने कहा मुझसे दुआ करो मैं कबूल करूँगा।" हम खुदा के आगे हाथ क्यों न फैलायें।

ऐ मेरी बहनो! जहांतक हो सके दुआ न मांगो। इसमें दुनिया व आखिरत दोनों की कामयाबी है। याद रहे कि दुआ मांगना भी खैरात मांगने के समान है। भीख मांगना जिल्लत है। अर्थात् दुआ न मांगना गुरुर व घमण्ड की दलील है।

दुआ की कुबूलियत के तरीके:

बन्दों को चाहिए कि हर वक्त

खुदा से दुआ करते रहें और कुबूलियत की उम्मीद रखें। यहां कुबूल हुई तो खैर वरना आखिरत में काम आयेगी। आखिरत में हर एक यह तमन्ना करेगा कि काश कोई दुआ दुनिया में कबूल न होती तो अच्छा था। अल्लाह कुदरत रखता है जो चाहे तुम्हें दे सकता है। मगर जो जो यहां तुम्हारे हक़ में बेहतर नहीं वह रोक रखता है, और तुम बेजाने बूझे निराश हो जाती हो। ऐसा न चाहिए। यह सच है कि खुदा तुम से अधिक तुम्हें चाहता है। इसलिए वह मसलहत के खिलाफ कोई काम नहीं करता। वह अपने बन्दों को जो मुनासिब समझता है देता है और जो मुनासिब नहीं समझता नहीं देता। हर छोटे बड़े को चाहिए कि वह उसी को पुकारें ताकि वह फरमांबरदार (आज्ञापलक) जानकर खुश हो।

दुआ के साथ उम्मीद शर्त है:-

ऐ मेरी उम्मीदवार बहनो! जब तुम उसे पुकारो तो उससे उम्मीद भी रखो। वह जरूर तुम्हारी ख्वाहिश पूरी करेगा क्योंकि वह बड़ी गैरतवाला है। और करीम है। उसे सवाल करने वाले को खाली हाथ फेरने से शर्म आती है। वह रहमान और रहीम है। अपने बन्दों को निराश नहीं करता। जो कुछ तुम मांगोगी जरूर देगा। चूंकि वह हकीम व अलीम और साधिकार हाकिम है इस लिए अगर प्रार्थना नामुनासिब (अनुचित) होगी तो पूरी न की जायेगी। यह भी

उसकी मेहरबानी है। किसी आने वाली बला को टाल देना भी एक इनाम है। वह जानता है, तुम्हें खबर नहीं। दुआ करके निराश हो जाना कुफराने नेमत है, अकृतज्ञता है। तुम्हें क्या खबर कि क्या आफत आने वाली थी जो दुआ से टल गई। खुदा की रजा पर राजी रहो। याद रहे अगर तुम्हें उसने दुआ की तौफीक दी है तो वह कबूल हो के रहेगी।

मुसीबतों का इलाज दुआ में है

यह वक्त बहुत ही खतरनाक है। जो दिन चैन से गुजर जायें उसको गनीमत समझो। कियामत करीब है। मुसीबत को दूर करने की दुआ के सिवा कोई सूरत नहीं। इसलिए पांचों वक्त की नमाज के बाद और खास कर फर्ज के बाद खुदा के सामने हाथ फैला के हर बुराई से पनाह मांगो और हर भलाई की विनती करो। दुआ से बेहतर कोई चीज नहीं। हदीस में है कि 'दुआ करने वाला बर्बाद नहीं होता।' नहीं टालती मौत को कोई चीज मगर सदकः और नहीं दूर करती बला कोई चीज मगर दुआ।

दुआ की बरकतों और उसका फल

तुम दुनिया के सारे काम करती हो अगर थोड़ा वक्त दुआ के लिए निकाल लो तो तुम्हें दुनिया व आखिरत का फायदा हासिल हो जायेगा।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

खुदा अवलोकन का अरती उत्तर

मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी

एक खुदा की बन्दगी और रसूल (सल्ल०) की ताबेदारी और महब्बत—

मिलते इस्लामिया का वजूद और उसकी स्थिरता जिन विशेषताओं से सम्बन्धित है, वह एक खुदा की बन्दगी, और अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्ल० की ताबेदारी और आप की महब्बत है। तौहीद (एक खुदा पर विश्वास) की विशेषता तो मुसलमानों को शिक्ष करने वाली कौमों और व्यक्तियों से अलग करके एक खुदा की उपासना और उसी के आदेशों को मानने वाला बनाती है। दूसरी विशेषता अंतिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ताबेदारी और यह आस्था कि आप (सल्ल०) अल्लाह के आखिरी नबी हैं और आप का लाया हुआ दीन आखिरी और मुकम्मल दीन है। यह विशेषता सभी मुसलमानों को एक मज़बूत और एकताबद्ध कौम बनाने वाली है। मिलते इस्लामिया की यह दो विशेषता न केवल इसे दूसरी कौमों से विशिष्ट (मुस्ताज) बल्कि उनके द्वारा मुसलमानों में ऐसी एकता, मेल मिलाप और महब्बत पैदा करती हैं जिसकी मिसाल दूसरी कौमों में नहीं मिलती। शिक्ष वालों के तरीके, आदतें और कर्म क्षेत्र की विभिन्नतां के साथ अलग अलग भिलंगे। इस लिए कि तौहीद (एकेश्वरवाद) के अकीदे के अतिरिक्त कोई ऐसी प्रभावी शक्ति नहीं है जो किसी कौम में एक रूपता और एका

पैदा करे और अंतिम रसूल के अंतिम सन्देश और मुकम्मल दीन पर आस्था और उनकी महब्बत उम्मत के लोगों में जो भाईचारा और प्रेम पैदा करती है और मुस्लिम देशों के हर देश के मुसलमानों को एक दूसरे से जिस प्रकार 'जोड़ती है उस प्रकार कोई और साधन जोड़ पैदा नहीं कर सकता।

चुनानचः मुसलमानों में रंग, नस्ल, भाषा, संस्कृति क्षेत्री और मातृभूमि की तरह की भिन्नता के बावजूद भाईचारगी और सम्बन्धों का ऐसा वातावरण बन जा जाता है कि दूसरे लोग हैरत में पड़ जाते हैं लेकिन मुसलमानों की यह दोनों बुनियादी विशेषताएं उसे उस समय प्राप्त होती हैं जब वह तौहीद पर पूर्ण आस्था रखने के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से महब्बत और उनके निर्देशों पर अमल करने का पाबन्द हों। रसूल की मुहब्बत इस का बड़ा ज़रिया रहा है और हदीस शरीफ में इसका वर्णन ताकीद के साथ किया गया है।

तुम में से कोई व्यक्ति भी उस समय तक मोमिन (हकीकी मुस्लिम) नहीं हो सकता जबतक मैं उसको इतना प्रिय न हो जाऊं जितना न उसके पिता, न उसका बेटा और दुन्या की कोई दूसरा व्यक्ति हो।" अर्थात अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुसलमानों की मुहब्बत अपने बाप, बेटे और हर इंसान

की महब्बत से अधिक हो। यह है वह दर्जा जो हकीकी सच्चे मुसलमान का बताया गया है।

मुसलमानों को जब अपने अंतिम रसूल (सल्ल०) से ऐसी बड़ी और गहरी महब्बत होती है तो न तो उस को आप के बताए हुए अकीदे (आस्था) के अतिरिक्त कोई दूसरा अकीदा कुबूल होता है और न कोई ऐसा रस्मोरवाज या अमल जिसको हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना किया हो या नापसन्द किया हो। उसको कुबूल होता है और जब उस को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वास्तव में सबसे अधिक प्रेम होगा तो उसका दीन शुद्ध (खालिस) और उसका प्रभाव और उसकी फरमावरदारी (आज्ञापालन) मुकम्मल होगी और यही वह प्रभाव और ताक़त है जो ज़माने के साथ कम होने के बावजूद आज तक मुसलमान के दीन को बाक़ी रखे हुए है। संसार के दूसरे धर्मों चाहे आस्मानी हों या ज़मीनी, सब ज़माने के प्रभाव से अपनी असल हालत से बहुत दूर हो चुके हैं लेकिन इस्लाम आज भी अपनी सही रूप रेखा में बाक़ी है। इसका दीनी रूप वही है जो उसके आखिरी नबी ने आज से चौदह सौ साल पूर्व बनाई और सिखाई थी। इसका असल कारण एक खुदा पर ईमान और अकीद-ए-रिसालत (रसूल पर पूरी आस्था) है जो इस्लाम को अपनी जगह से हटने नहीं देती और इस में हमारी

• मदद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ताबेदारी का सम्बन्ध व प्रेम और उनके कथन और आदेश पर अमल या अमल की इच्छा शक्ति करती है। हम को जब भी किसी धार्मिक सामले में या किसी दूसरे धर्म को देख कर किसी बात में सन्देह पैदा होता है या जानकारी की आवश्यकता होती है तो हम खुदा—ए—वाहिद की भेजी हुई किताब कुआँन मजीद को, जिस को हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लेकर आए, सब से पहले देखते हैं और जो उन्होंने फरमाया और बताया और खुद करके दिखाया और जो उनके सहाबा (रजि०) ने उनकी तरफ से बताया या उनकी बात पेश की उसको देखते हैं और वहाँ से जवाब प्राप्त करनते हैं। चुनानच: हम इस प्रकार भटकने से बच जाते हैं और सच्चे मार्ग पर चलते हैं लेकिन यह आज्ञापालन और सच्चे मार्ग की यह तलब और सच्चे दीन की यह फ़िक्र उसी समय काम करती है जब हम को अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से महब्बत और आज्ञापालन से सम्बन्ध हो और यह एहसास हो कि कियामत में जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमको देखेंगे तो सच्चे दीन की फ़िक्र और शरीअत (धार्मिक नियम) का अनुपालन और सुन्नते नबवी (सल्ल०) पर अमल के सिलसिले में हम ने दुन्यावी जिन्दगी में क्या किया उसको देखा कर हमारे रवैये (गतिविधियों) से खुश होकर हम को अच्छी नज़र से देखेंगे या हमारे बुरे कर्मों को देख कर मुंह फेर लेंगे और कहेंगे ऐ पालनहार यह लोग हमारे नहीं हैं। उन्होंने हमारे तरीके को नहीं अपनाया था। उनको दुन्या के दूसरे

लोगों और चीज़ों से अधिक प्रेम था लेकिन मुसलमान को जब सचमुच अपने नबी (सल्ल०) से प्रेम होगा तो वह प्रेम उसको नबी (सल्ल०) के आदेशों और उसकी लाई हुई शरीअत और दीन से हट कर कोई काम करने में आड़े आजाएगा और ध्यान दिलयेगा कि ऐ रसूल सल्ल० के प्यारे तुम कियामत के दिन अपने नबी को क्या मुंह दिखाओगे और खुदा के हुजूर में तुम्हारे नबी (सल्ल०) क्या कह कर तुम को पेश करेंगे। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम करने वालों का यह एहसास उसके दर्मियान और खुदा और रसूल (सल्ल०) की नाफरमानी (अवज्ञा) के दर्मियान एक पुश्ता बनकर आ जाता है जो उसको गलत और नाफरमानी के काम से रोक देता है।

आवश्यकता है कि हम अपना जाएं जा लेते रहा करें कि जो लोग हमें प्रिय हैं या जिन चीज़ों को हम पसन्द करते हैं हुजूर (सल्ल०) की महब्बत या लगाव से उनकी महब्बत या उनसे लगाव अधिक बढ़ा हुआ तो नहीं है कि वह हमको उस जीवन शैली से हटा दे जो हम को हमारे प्रिय नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न बताया है और कियामत के रोज़ हम को उनके सामने शर्मिन्दा तथा संसार के पालनहार के सामने हम को मुजरिम बना कर खड़ा करे दे।

हमारे अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हमारी महब्बत आखिरत में सफलता दिलाने के साथ इस सांसारिक जीवन में मुसलमानों के दर्मियान एकता और भाईचारे की फ़ज़ा काईम करती। और काले गोरे के अन्तर के बावजूद

मुसलमान हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लाए हुए दीन व शरीअत को तस्लीम करने वाले हैं। रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्रेम का यह सम्बन्ध मुसलमानों को आपस में जोड़ने वाली एक जबरदस्त शक्ति है जो उसको बुराइयों और गुमराहियों से बचाने वाला एक बड़ा साधन बन जाती है। यह एक महान वरदान है बल्कि मिलते इस्लामिया के जिन्दगी की पूंजी है इसकी सुरक्षा की हमेशा चिन्ता करना आवश्यक है लेकिन इसके लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपना लगाव बढ़ाना और आप की बताई हुई जिन्दगी को अपनाने की फ़िक्र करना होगा। आपके पवित्र आचरण का अध्ययन और आपकी पवित्र जीवन शैली और हालात को जानना होगा और आप (सल्ल०) ने एक खुदा पर ईमान लाने और उसके आदेशों का पालन और उसकी बन्दगी करने के लिए जो हिदायत दी हैं उन पर अमल करना होगा और आप (सल्ल०) ने उसके लिए जो तकलीफ़ उठाई मुसीबतें झेलीं ओर कुर्बानियाँ दीं, उनको देखना होगा और उनसे रोशनी हासिल करना होगा ताकि हम आखिरत में अपनी सफलता और श्रेष्ठता का सामान कर सकें और अपने को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने कियामत (हिसाब किताब) के दिन आप (सल्ल०) के उम्मती की हैसियत से पेश कर सकें। हर माहे रबीअुल अव्वल की यह तारीखें जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महब्बत और उनकी लाई हुई जीवन शैली की अपनाने को तलब पैदा करती है वह बाकी रहे, कमज़ोर न हो, तुम (शेष पृष्ठ ३८ पर)

उसपे लाखों दुरुद उस पे लाखों सलाम

मौ० मुहम्मद सानी हसनी

जिन की कोशिश से बादे बहारी चली
जिन से हर शाख़ गुलशन की फूली फली
चिटकी इस्लाम की जिन से हर हर कली
वह अबू बक्र व फारूक व उस्मान अली
जिसके अदना गुलाम फतिहे मिस व शाम
उस पे लाखों दुरुद उस पे लाखों सलाम

बात मानी जिन्हों ने सताये गये
आग के फूर्श पर कुछ लिटाए गये
खींच कर कुछ सरेदार लाये गये
हक्क की आवाज़ फिर भी लगाए गए
थे खुबैब और खब्बाब जिस के गुलाम
उस पे लाखों दुरुद और लाखों सलाम

वह सुहैब और سलमान यासिर बिलाल
जैद व अम्मार भी खुश ख्याल व खिसाल
जिनको हासिल यकीं था तमामो कमाल
जिन पे कुर्बान राही जमालो जलाल
हैं उसी के सभी खूबरु मुश्कफ़ाम
उस पे लाखों दुरुद और लाखों सलाम

फतिमा प्यारी बेटी हुसैनो हसन
पार-ए-दिल, जिगर गोशा, जुज़वे बदन
जिन से आरास्ता है नबी का चमन
हैं चमन के गुलो लाला व नस्तरन
एक है सैफ़े हक्क एक सुलहे तमाम
उस पे लाखों दुरुद उस पे लाखों सलाम

वह दयारे नबी रश्के अज्ञों समा
पाक जिस की ज़मीं पाक जिस की फज़ा
जिसका शीरीं है पानी मुअत्तर हवा
खुक्क को जिस की कहते हैं खाके शिफ़ा
शैक्क है उसकी जानिक चलूं तेजगाम
उस पे लाखों दुरुद उस पे लाखों सलाम

रश्क तुझ पर है मुझ को बहुत ऐ सबा
तू मदीने को जाती है सुब्हो मसा
एक मैं हूं सरापा गुनाहो खुता
काश मुझ को भी हासिल हो खाके शिफ़ा
मेरे लब पर यही रात दिन सुब्हो शाम
उस पे लाखों दुरुद उस पे लाखों सलाम

आतिशो शैक्क है तेज़ से तेज़ तर
मैं हूं गर्म सफर हर नफस हर नज़र
है हसीं रह गुज़र इश्क है राह पर
राज़-ए-पाक है मजिले मुअत्तबर
मेरी किस्मत कि हूं ज़ाइरो हमकलाम
उस पे लाखों दुरुद उस पे लाखों सलाम

देर से कह रही है दुरुदो सलाम
आ गया ऐ ज़बा फिदवियत का मकाम
अब नबीये मुकर्रम का ले पाक नाम
हां मगर बा अदब और बसद इहतिराम
जिस के सदके मैं अलम का सारा निज़ाम
उस पे लाखों दुरुद और लाखों सलाम

वह हबीबे खुदा ताहिरो मुस्तफ़ा
कासिमो हामिदो हुज्जतो मुर्तज़ा
सादिको रहमतो तय्यबो मुजतबा
ताहा यासीन मक्की वह ख़ूबलवरा
वह शफ़ीओ मुनीरो शहीदो इमाम
उस पे लाखों दुरुद उस पे लाखों सलाम

वह हिजाज़ी तिहामी यतीमो ग़नी
वह रऊफ़ो बशीरो नज़ीरो नबी
वह रसूलो मुज़्किर अमीं हाशिमी
वह है उम्मी लकब अबही मुत्तकी
जिस के महमूद अहमद मुहम्मद है नाम
उस पे लाखों दुरुद उस पे लाखों सलाम

खुदा को भुलाने की सजा

स्वयं को भूल जाना है

“ उन लोगों की तरह न हो जिन्होंने खुदा को भुलाया तो खुदा ने उनको ऐसा बना दिया कि वह अपने को भूल गये । ” (कुर्�आन ५६:१६)

मनुष्य को सबसे अधिक लगाव अपने आप से है, उसकी तमाम दिलचस्पी का केन्द्र बिन्दु स्वयं उसकी अपनी जात है। गहराई से देखिए तो उसको जिस से मुहब्बत है अपनी जात के लिए है। जो उससे मुहब्बत करता है उससे वह भी मुहब्बत करता है, जिसको उससे नफरत है उसमें हजारों खूबियाँ हों उससे दिल को लगाव नहीं पैदा होता। जीवन के सारे क्रिया कलाप, चहल पहल, दौड़ धूप इसी मुहब्बत व प्रेम के दम से है। हर मुहब्बत व लगाव की तह में इसी प्रेम का चमत्कार नज़र आयेगा। दुनिया की हर चीज़ भूल सकती है, इन्सान हर एक से ग़ाफिल हो सकता है लेकिन कठिन से कठिन घड़ी में अपने आप को अपनी जात से ग़फ़लत नहीं होती, और कठिन घड़ी में जब औलाद, सगे सम्बन्धी और दोस्त सब भूल जाते हैं, मनुष्य को अपनी चिन्ता रहती है और इन्सान अपनी ख़ैर मनाता रहता है। यह एक सच्चाई है। रोजाना की बात है। मानव प्रेम प्रवृत्ति की विशेषता है। इसके विपरीत अगर दावा किया जाये तो कान खड़े होते हैं। क्या सचमुच इन्सान कभी अपने को भूल जाता है और उसको अपनी चिन्ता नहीं होती और सब की चिन्ता होती है? उसको अपना होश नहीं रहता

और हर बात का होश रहता है, उसको सारे जहां की चिन्ता होती है और अपनी चिन्ता नहीं होती। उसको सब की जान प्यारी होती है और अपनी जान के पीछे हाथ धोकर पड़ा रहता है और यह किसी उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए नहीं, किसी सिद्धान्त के मातहत नहीं, त्याग व बलिदान की भावना से नहीं, बल्कि यह स्वयं को भूल जाने की स्थिति में एक मानसिक महामारी के रूप में ।

कुरान यही दावा करता है। वह कहता है कि खुदा को भुला देने की सजा स्वयं को भूल जाना है। जब इन्सान खुदा को भुलाता है तो वह दिखा देता है कि फिर अपने को भूलता चला जाता है। जीवन की व्यस्ततायें बढ़ती चली जाती हैं। सारी ज़िन्दगी इन्सान के गिर्द चक्कर लगाती नज़र आती हैं। मगर इन्सान किसी और चीज़ के गिर्द चक्कर लगाता नज़र आता है। उद्देश्य निगाहों से ओझल हो जाता है और साधन व स्रोत साध्य बन जाते हैं। चीज़ों से सीधे ऐसी दिलचस्पी पैदा हो जाती है कि अपनी जात (व्यक्तित्व) भी बीच में से निकल जाती है, फिर एक ऐसी आपात स्थिति उत्पन्न हो जाती है कि अनुभूति (एहसास) समाप्त हो जाती है। लज़्ज़त व राहत जो दुनिया में सदा से बड़े लक्ष्य रहे हैं, बुद्धि से निकल जाते हैं, इन्सान उन से बंधित होता चला जाता है और इस घाटे का एहसास और उस पर अफसोस होता है।

भी ख़त्म हो जाता है। काल्पनिक वस्तुएं वास्तविक चीज़ों की जगह ले लेती हैं और मानव जीवन अजाइबात (अजीब बातें) का ढेर बन कर रह जाता है। और यह सब इस दौर में होता है जब खुदा के बजाय इन्सान अपनी जात को पूजने लगता है, और अपने अलावा हर चीज़ के इन्कार पर आमादा हो जाता है। किन्तु यह खुदा को भुला देना और ईश्वर से यह बग़ावत जितनी तरक्की करती है, स्वयं को भूल जाना, खुद से दुश्मनी, आत्महत्या उतनी ही बढ़ती चली जाती है।

सभ्यता के शायद किसी युग में कुरान के इस फ़रमान का जुहूर (प्रकट, उत्पत्ति) इतना सुस्पष्ट और साफ तरीके पर न हुआ हो जितना इस तरक्की के दौर में। मनुष्य का अपनी जात के मामलों में तनमयता, अपनी जात में मगन रहना शायद इतना कभी न रहा हो जितना इस ज़माने में। लज़्ज़त व राहत के साधन शायद कभी इतने ईजाद न हुए हों जितने इस दौर में। स्वयं को पूजने की फ़िलास्फी शायद किसी युग में ऐसी न सजाई जैसी इस ज़माने में। अपने अलावा हर चीज़ के इन्कार की रुचि शायद कभी इतनी आम न हुई हो जितनी इस मौजूदा सोसाइटी में। लेकिन सच्चाई और दिन रात का अनुभव क्या है? क्या यह नहीं कि इन्सान अपनी असली समस्या से सबसे अधिक ग़ाफिल है, असावधान है? अपने अन्जाम से सबसे अधिक

निश्चिन्त है? अपनी जात से सबसे अधिक बेपरवाह है? लज्ज़त व राहत की हकीकत से सब से अधिक वंचित है? जीवन के ढेर में उसका अपना हिस्सा सबसे अधिक कम है, वह रूपया ढालने की मशीन बन कर रह गया है जो अपने ढाले हुए सिक्कों से स्वयं फायदा नहीं उठा सकती। उसका हिस्सा जिन्दगी में सिर्फ इतना है कि उसको इतना तेल दिया जाता रहे जिससे वह चलती रहे। संवेद (जज़बात) और अनुभूति (एहसास) से वंचित, सुख-दुख से महरूम, खुशी व ग़म से बेखबर एक बेजान मशीन है।

वह तेली का बैल बन कर रह गया है जो एक निर्धारित दायरः के अन्दर चक्कर लगाता रहता है। काम लेने वाले से चारा पानी पाता है और बिना किसी शिकायत के चक्कर लगाता है। आज सभ्यता व समाज के इस चक्कर में इन्सान भी तेली के बैल की तरह फिर्की की तरह फिर रहा है, सभ्यता के बन्धन में जकड़ा हुआ है, सोसाइटी के स्टैन्डर्ड्स का पाबन्द है। दूसरों के लिए कमाता है, दूसरों के लिए पहनता है और जिन्दा रहने के लिए उसको रातिब या राशन मिलता रहता है। वह एक कुली बन कर रह गया है, बोझ ढोता है। सभ्यता की प्राड़ी चलाता है और थोड़ी सी मज़दूरी पाता है। सच्चे स्वाद व सुख, अच्छा भोजन, अच्छी हवा, आत्म सन्तोष, दिल के सुकून, अन्तःकरण के सुख, मेहनत की लज्ज़त से वंचित है। और जिन्दगी का धारा तेजी से बह रहा है और सभ्यता का चक्कर इस ज़ोर का चल रहा है कि उसको इन समस्याओं पर सोचने की भी फुरसत नहीं। शरीर

इतना थका, दिमाग़ इतना अपाहिज, इतनी बौद्धिक व्यवस्ता और दिल इतना मुर्दा हो चुका है कि उसको इस महरूमी और मदहोशी का भी होश नहीं। वह इस धारे में तिनके की तरह बहा चला जा रहा है। वह एक ऐसा सवार है जो सवारी के काबू में है, सवारी उसके काबू में नहीं।

खुदा फ़रामोशी की सज़ा खुद फरामोशी अजब इबरतनाक (सीख देने वाली) है। लाखों करोड़ों लोग, पूरी पूरी कौमें, बड़ी बड़ी सलतनतें इस खुदा फ़रामोशी, खुदकुशी का शिकार हैं। एक मानसिक ताऊन है जो सारी दुनिया पर छाया है मगर आंख नहीं खुलती। खुदा को याद करने के बजाए उसको भुला देने वाले काम बढ़ते जा रहे हैं। ईश्वर से बगावत के झाँडे हर तरफ फहरा रहे हैं। स्वयं को पूजने का प्रचार जितना किया जा रहा है इंसान स्वयं को उतना ही भूलता जा रहा है। जीवन के वरदान और अन्तरआत्मा का सुखचैन छिनते चले जा रहे हैं। लक्ष्य बनाये जाते हैं और साधनों में उलझा दिये जाते हैं दौलत राहत के लिए थी, दौलत रह गई, राहत ले ली गई और इस तरह ली गई कि उसका कहीं निशान नहीं मिलता। और अब लोगों ने इसकी खानापूरी भी दौलत से करनी शुरू कर दी। खानपान की चीज़ें बढ़ गईं, दवायें बढ़ गईं और स्वास्थ्य छीन लिया गया। तेज़रफ्तार सवारियां और यातायात के साधन राहत व सहूलत के लिए थे, अब तेज़रफ्तारी ही लक्ष्य बन गयी और राहत ग़ायब हो गई। प्राकृतिक कठिनाइयां दूर हुईं तो कानूनी और कृत्रिम कठिनाइयां स्वयं पैदा कर लीं और ऊपर ओढ़ लीं। सफ़र आसान

हुआ तो सफ़र का मक़सद मुश्किल हो गया। पहले एक जगह से दूसरी जगह पहुंचना कठिन था अब पहुंचना आसान है लेकिन मंज़िल उरावनी और सफ़र का मक़सद भयानक है। पहले एक शहर के आदमी का दूसरे शहर के आदमी से बात करना मुश्किल था, अब बात करना आसान है लेकिन इस बात में कोई आकर्षण नहीं रहा। मुहब्बत काफूर हो गई। खून सफेद हो गया। स्वार्थ का हर जगह दौर दौरा है। पहले दूर दराज़ के लोग आवाज़ को तरस्ते थे मगर अब आवाज़ सुनने से बेज़ार रेडियो के झूठ और प्रोपगन्डे से आजिज़ हैं। तात्पर्य यह है कि उद्देश्य की खराबी अथवा इस्तेमाल के तरीके की खराबी ने इन साधनों व मशीनों को भी बेकार बल्कि जी का जंजाल बना दिया है और मानवजीवन अर्थ विहीन, बेमक़सद, बेरुह, बेकैफ़, बेलज्ज़त और बेहिस (चेतना शून्य) होकर रह गई है।

कुरआन का पैगाम यह है कि यह स्वयं को भूलजाना नतीजा है खुदा को भुला देने का। इसका इलाज सिर्फ़ खुदा को पहचानना, जानना, मानना और उसकी तलब है। दूर भागने के बजाय वापसी, नफ़रत के बजाय महब्बत, इन्कार के बजाए इकरार व ईमान, बगावत के बजाए सुलह और सरकशी के बजाए आशापालन और खुदा से भागने के बजाय खुदा की तरफ भागने की ज़रूरत है।

प्रस्तुति तथा अनुवाद : मो० हसन अंसारी आपके ५० पैसों का एक पोस्ट कार्ड हमारे लिये मूल्यवान होगा। हम आप के सुझाओं का स्वागत करेंगे।

(सम्पादक)

हज़रत सुलैमान

अलैहिस्सलाम

रानी अपने मंत्रियों से परामर्श करती है —

सुलैमान अलै० ईशदूत होने के साथ—साथ एक ज्ञानी महाराजा भी थे। इसी कारण उनका पत्र बहुत ही नपा—तुला था। सबा की रानी को भी एक राजा महाराजा और विजेताओं के चट्ठि का उसे अच्छा अनुभव था। अगरचे उसकी बुद्धि ने ईश्वर की पहचान और उसकी पूजा के सिलसिले में उसको धोखा दे दिया था। सुलैमान अलै० के खत को पढ़कर उसने बड़ी स्थिरता से विचार विमर्श किया। हुक्मत के विद्वानों और ज्ञानियों को इस खत से अवगत कराया। क्योंकि ये पत्र दूसरे साधारण पत्रों की तरह न था ये पत्र उस जमाने के सबसे बड़े बादशाह और ईशदूत का था। इस खत में अल्लाह की ओर आने की दावत थी। लेकिन रानी की हुक्मत के मन्त्रियों ने अपनी ताकत और वीरता को प्रदर्शित करना शुरू कर दिया। वो रानी की चापलूसी करने लगे। जैसा कि हर ज़माने के उन लोगों का हाल रहा है। जो राजा महाराजा के आस पास रहकर अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। रानी ने उनकी बात न मानी बल्कि उनको आक्रमण के बुरे परिणाम से डराया। और विजयी राजाओं का जो बरताव पराजित लोगों के साथ होता है। उससे भी अवगत कराया। रानी ने उनसे कहा कि यही दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम हमारा भी होगा। हमारी जनता और देश दोनों

नष्ट होकर रह जाएंगे फिर उस चतुर रानी ने अपने दरबारियों से कहा कि मैं सुलैमान के पास बहुत से कीमती उपहार भेजकर उनको आजमाना चाहती हूँ। अगर वो ये उपहार कुबूल कर लेते हैं तो हम समझेंगे कि वह भी हमारी ही तरह के राजा हैं। तब हम उनसे युद्ध करेंगे। और अगर वो हमारा उपहार कुबूल नहीं करते हैं तो समझेंगे कि वे ईश दूत हैं। तब हम उनके आदेश के अनुसार अपना जीवन बिताएंगे क्योंकि नबी का विरोध करना अपना अन्त खराब करना है।

सौदेबाज़ी वाला उपहार —

इस परामर्श के बाद रानी ने हजरत सुलैमान के पास ऐसा उपहार भेजा जिसे केवल राजा महाराजा ही भेज सकते हैं। जब वो तोहफा हजरत सुलैमान अलै० के दरबार में पहुंचा। तो आपने मुंह फेर लिया। और उस उपहार के प्रति कोई रुचि नहीं दिखाई आप ने फरमाया कि क्या तुम लोग माल व दौलत देकर मुझसे मेरे भिशन का सौदा करना चाहते हो। क्या तुम ये चाहते हो कि मैं माल लेकर तुमको शिक्क करने के लिए छोड़ दूँ। या तुम ये चाहते हो कि माल लेकर तुम्हारे गलत काम को उचित होने का सर्टिफिकेट दे दूँ ऐसा कभी नहीं होगा। ईश्वर की कसम है कि जितना माल और जैसा राज्य तुम्हारे पास है उससे कहीं ज़ियादा माल और उसके देश से

आसिफ अन्जार नदवी

बहुत विशाल देश ईश्वर ने मुझे प्रदान किया है। ये बातें हम बहुत गम्भीरता से कह रहे हैं। ये अल्लाह की ओर बुलाने का भिशन है कोई मज़ाक नहीं। ये आज्ञापालन का मामला है भाव ताव का नहीं। उन लोगों को बड़ी सख्त चेतावनी के साथ वापस कर दिया। कहा कि जाओ हम ऐसी फौज लेककर तुम्हारे देश पर आक्रमण करेंगे जिस को रोक पाना तुम्हारे बस से बाहर होगा।

रानी फरमाबरदार होकर आती है —

जब रानी की भेजी हुई पार्टी नाकाम होकर वापस आयी और उसने सुलैमान अलै० के बारे में मुल्क सबा के वासियों को सारी बातों से अवगत कराया तो रानी और उसकी सारी जनता सुलैमान की आज्ञाकारी हो गयी। फिर उसके बाद रानी अपनी सेना को लेकर सुलैमान के दरबार में आज्ञापालक बनकर हाजिर होने के लिए चल पड़ी। जब सुलैमान अलै० को उसके फरमाबरदार होकर आने की खबर मिली तो आप बड़े खुश हुए और अल्लाह का शुक्र अदा किया। हज़रत सुलैमान की खाहिश ये हुई कि सबा की रानी को अल्लाह की कोई निशानी दिखाए ताकि रानी समझ जाए कि अल्लाह ने सुलैमान अलै० को कैसी कैसी नेअमतें दी हैं। और अल्लाह की ताकत ने उन पर क्या क्या कृपा की है सुलैमान (अ०) ने

दरबार बुलाया। ताकि सबा की रानी का तख्त उनके आने से पहले ही लाने का आदेश दें। अल्लाह तआला ने एक मोजिजे के माध्यम से हज़रत सुलैमान अलै० की यह इच्छा पूरी कर दी। जब सबा की रानी का तख्त आ गया तो हज़रत सुलैमान (अ०) ने उसमें थोड़े परिवर्तन का आदेश दिया। ऐसा आपने रानी की परीक्षा के लिए किया था। आप ये देखना चाहते थे कि क्या रानी अपने तख्त को हल्का सा परिवर्तित होने के बाद भी पहचान लेती है या नहीं। अगर उसे तख्त पहचानने में कठिनाई का सामना हुआ तो इसका मतलब ये हुआ कि अल्लाह को पहचानने में भी उससे भूल हुई है।

कांच का विशाल महल —

सबा की रानी अभी रास्ते में ही थी कि इधर हज़रत सुलैमान ने महान राजगीरों को आदेश दिया कि कांच का एक विशाल महल बनाएं उन कारीगरों ने जिन में बहुत से मनुष्य थे। और बहुत से जिन्नात, मिलकर कांच का एक विशाल महल बनाया जिस के नीचे नहर बहती थी। जिन लोगों को ये मालूम न था कि महल के नीचे पानी बहता है। और उसके ऊपर कांच को माहिराना अन्दाज से सेट किया गया है वोह उस कांच को ही पानी समझ लेते थे। लेकिन यहां कारीगरी ये थी कि महल में चलने वालों और पानी के बीच में शीशा था। और बात बिल्कुल यकीनी थी कि जब सबा की रानी उस महल को देखने जाएगी तो उसको पानी समझेगी और अपने कपड़ों को भीगने से बचाने के लिए पाईचे को ऊपर करने की कोशिश करेगी। इसी मौके से उसकी गलती

सिद्ध हो जाएगी और उस का तौहीद के विषय में धोखा खाजाना भी साबित हो जाएगा रानी और उसकी कौम सूरज को देवता मानकर उसी की पूजा में लगे हुए थे इसलिए कि इस दुनिया में सूरज रोशनी का सबसे बड़ा नज़र आने वाला केन्द्र है। जो कि अल्लाह की एक मखलूक है। यहां पर उसकी आँखों से परदा हट जाएगा और वह जान लेगी कि जिस प्रकार पानी और कांच को पहचानने में उससे गलती हुई उसी तरह सूरज को मालिक और पालनहार समझने की गलती हुई। हज़रत सुलैमान अलै० की यह तरकीब सैकड़ों भाषणों और हजारों दलीलों पर भारी थी।

इस्लाम कुबूल कर लिया—

सुलैमान अ० की मलिका के बारे में जो सोच थी वे जाहिर हो कर रही रानी अपनी तमाम अकलमन्दी और बुद्धिमानिता के बावजूद ये गलती कर बैठी। कि उसने कांच को हिलकोरे लेता हुआ बहता पानी समझ लिया फिर क्या था रानी ने अपने पाइचे ऊपर चढ़ा कर महल में प्रवेश करने का इरादा किया अल्लाह के नबी हज़रत सुलैमान ने रानी को उसकी गलती पर सूचित किया और कहा कि ये ऐसा महल है कि जिसके नीचे भी शीशे जड़े हुए हैं तब रानी की आँखों से पर्दा हट गया और उसकी समझ में आ गया कि सूरज की जाहिरी ताकत को देखकर उसके सामने सजदा करना उसकी बड़ी भूल थी उसने सूरज को रोशनी को ही सत्य प्रकाश समझ लिया था। हालांकि सत्य प्रकाश तो अकेला ईश्वर है। ‘हकीकत एक तू, बाकी फसाना’। रानी अपनी गलती से अवगत हो गई उसने

फौरन इस्लाम कुबूल कर लिया और कहने लगी ऐ मेरे पालनहार मैं ने अपनी आत्मा पर बड़ा अत्याचार किया और अब मैं सुलैमान के साथ सारे संसार के रचयिता और पालनहार पर इमान लाती हूं।

नबी (सल्ललल्लाहु अलैहि वसल्लम) का नाम वनसब

हमारे पैग़म्बर शफ़ीअे रोज़े महशर, हज़रत खैरुल-बशर का नामे नामी मुहम्मद और अहमद है। सल्ललल्लाहु तआला अलैहि वअला आलिही व सहबिही व बारक व सल्लम। कुन्यत आप की अबुलक़ासिम वालिद माजिद का इस्मे गिरामा अब्दुल्लाह वालिदा का नामे मुबारक आमिना था।

बाप की तरफ से नसब इस प्रकार है :

मुहम्मद (सल्ललल्लाहु अलैहि वसल्लम) बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे मनाफ़ बिन कुस्तिय बिन कलाब बिन मुर्रा बिन कअब बिन लुवैई बिन ग़ालिब बिन फ़हर बिन मालिक बिन नज़्र बिन कनाना बिन खुज़ै मा बिन मुदरिका बिन इल्यास बिन नज़्र बिन नज़ार बिन मुअद्द बिन अदनान। (यहां तक आप (स०) का नसब मुत्तफ़ क अलैहि हैं) मां की तरफ से आमिना बिन्त वहब बिन अब्दे मनाफ़ बिन ज़ुहरा बिन कलाब बिन मुर्रा (आखिर तक)

दुश्मन और हौस्तियाद

हैदर अली नदवी

इन्सानों का सबसे बड़ा दुश्मन शैतान है उससे दुश्मनी रखने और उसे दुश्मन बनाने का हुक्म (आदेश) कुरआन में दिया गया है बल्कि दुश्मनी रखना वाजिब और सवाब का साधन है।

बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है उसे दुश्मन बनाओ (कुरआन 35:6) आज हम अपनी जिन्दगी में झाँक कर देखें कि हमने कितने दुश्मन बना रखे हैं, कोई हमारी जायदाद से उलझा तो हमारा दुश्मन, मारने मरने पर आमादा किसी ने गाली दे दी तो दुश्मन, किसी ने इज्जत पर धब्बा लगाया तो दुश्मन, दोस्ती में आड़े आया तो दुश्मन, घर वाले दुश्मन खान्दान वाले दुश्मन, रिश्तेदार, भाई, भतीजे दुश्मन, बीवी से अनबन हुई तो दुश्मन, गरज़ कि दुश्मनी का एक तवील सिलसिला है किसी के यहां कम तो कहीं ज़ियादा जिससे हमें चन्द कौड़ियों का या किसी ओहदे (पद) का नुकसान नज़र आया उसे अपने दुश्मनों की सूची में डाल दिया, लेकिन क्या हमने अल्लाह के बताए हुए दुश्मन को भी अपना दुश्मन समझा है क्या उस दुश्मन के दाव घात से बचने का तरीका सीखा है। देखो भाई बात ये है कि हम जिसे अपना दुश्मन समझते हैं उसकी हर साज़िश हर प्रोपगण्डे से होशियार रहते हैं उसकी हर चाल पर पैनी नज़र रखते हैं दुश्मन अगर दोस्त की शक्ति में आए तो भांप लेते हैं अगर खैर खाव हस्ताकार बन कर आए तो होशियार रहते हैं वह नफा (लाभ) की

शक्ति पेश करे तो भी बचते हैं क्योंकि उसकी दोस्ती में दुश्मनी और लम्बे नुकसान का भयानक खतरा छिपा होने का खतरा होता है लेकिन हम सोचें क्या पक्के दुश्मन के साथ हमारा यही बर्ताव है। हकीकत ये है कि हमने अपने वास्तविक दुश्मन को नज़र अन्दाज़ कर रखा है। जिसने दुश्मनी करने और बदला लेने और हर मुम्किन (संभावित) तरीके से इन्सानों को गुमराह (पथभ्रष्ट) करने की क़सम खाई है और अल्लाह से मुहलत मांगी है उसे मुहलत दी गयी है।

अवश्य हम इन्सानों को सीधी राह से भटकाएंगे दाएं से बाएं से आगे से पीछे से शैतान ग्राहकों की शक्ति में दोस्त बनकर दुकान पर आएगा नमाज़ से ग़ाफिल करेगा— वह मीठी नींद की सुहानी गोली देकर खुदा के नाफरमानों बागियों की सफ में खड़ा कर देता है वह गलत कामों में फायदा दिखाने वाला दोस्त बनकर आता है वह इज्जत शोहरत उहदे की लाइन से नाफरमानी कराता है वह रस्मों रवाज में इज्जत दिखाता है वह शादियों में फुजूल खर्ची, दहेज की मांग करके काम बनता समझाता है वह कारोबार की लाइन से तालीम की लाइन से पीरी मुरीदी की लाइन से फ़क़रो फाक़ा की लाइन से बड़ा ताजिर (व्यापारी) बनाने की लाइन से खौफ व डर की लाइन से वह औरत और दौलत की लाइन से हुकूमत व विजारत की लाइन से, फैशन की लाइन

से टी०वी०, वी०डी०ओ०, सी०डी०, वी०सी०आर० की लाइन से और न जाने किन किन लाइनों से हमको हमारी नस्लों को बर्बाद कर रहा है हमारी सबसे बड़ी पूँजी ईमान व आमाल को लूट रहा है हमारे अकाइद पर हमले कर रहा है हमें आखिरत से ग़ाफिल कर रहा है दुन्या और उसकी चीज़ों में फ़ंसा रहा है हमारे घरों हमारी औलादों हमारी जिन्दगियों से अल्लाह के हुक्म रसूले मकबूल (सल्ल०) का दिया हुआ तरीका निकलवा दिया हमारे घरों में यहूदियों, नसरानियों, अव्याशों, के अड्डे कायम करा दिए मांओं बहनों के सरों से दुपट्टा उतरवा दिया तरक्की और तालीम के नाम पर लड़कियों को नीम बरहना (अधनंगा) कर दिया। दीन के नाम पर हमें चन्द रस्मों की डुगडुगी थमा दी। हमारी शादियां हमारी तकरीबात हमारी महफिलें बुराइयों का मज्मूआ बन चुकी हैं, इसकी वाहिद वजह ये है कि हमने शैतान की दुश्मनी को समझा नहीं हम उसकी तरफ से ग़ाफिल हो गए वह दोस्तों की अनेक सूरतों में आकर हमें दुन्या तलबी दुन्या की लज़्ज़तों के उस दलदल में फ़ंसा दिया जहां से निकलना मुश्किल से मुश्किल होता जा रहा है। इस दुश्मन से बचने के लिए मज़बूती से मुहम्मद अरबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शरीअत पर चलने और शैतान को खुला हुआ दुश्मन समझने की ज़रूरत है।

●●●

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

का पवित्र जीवन तथा उद्देश्य

हबीबुल्लाह आजमी

अन्य अम्बिया अलैहिस्सलाम (ईशदूत) और आप का मिशन

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने से पहले आने वाले सभी नबियों की पुष्टि की है और उनके सम्मान को इमान की शर्त बताई है। कुर्�आन के अनुसार संसार का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जहां नबी न भेजे गए हों। पैगम्बरे इस्लाम ने इस्लाम से पहले आने वाले सभी पैगम्बरों (ईशदूतों) के आदर और सम्मान का आदेश दिया है। उनका मिशन भी वही मिशन था जो आप का मिशन है केवल अंतर यह है कि आप आखिरी नबी हैं और आप का पैगाम पूरी मानव जाति के भलाई तथा कल्याण का अन्तिम पैगाम है। आप के बाद कोई नबी आने वाला नहीं है। आप (सल्ल०) के पहले संसार तौहीद (खुदा को एक मानना) के मिशन को भुला चुका था और उसने खुदा की सत्ता में अन्य व्यक्तियों को भी शरीक कर लिया था और उनकी पूजा करने लगा था। आप (सल्ल०) का उद्देश्य शिर्क को समाप्त करना और मानव जाति के मस्तिष्क में खुदा के एक तथा केवल एक होने का विश्वास इस प्रकार बिठाना था कि शिर्क का अंश भी बाकी न रहे। वर्तमान युग में विज्ञान के प्रसार व प्रचार का परिणाम है कि आज लोग ईश्वर के एक होने पर पूर्ण विश्वास करने लगे हैं। विज्ञान के अध्ययन और उन्नति के फल स्वरूप ही आधुनिक युग के साइंसदानों ने भी तौहीद के महत्व को खुले शब्दों में

स्वीकार कर लिया है।

सार्वजनिक शिक्षा की प्रेरणा : इल्म (ज्ञान) का शब्द कुर्�आन और हदीस में बार बार आया है। कुर्�आन की पहली आयत (अनुवाद) – “पढ़ो अल्लाह के नाम से” प्रारम्भ हुई है। कुछ आलिमों ने इसे केवल दीन के इल्म से मुराद लिया है जबकि पैगम्बरे इस्लाम के मिशन में दीन और दुन्या की कल्पना अलग अलग नहीं है। इतिहास में पहली बार शिक्षा ग्रहण करना मनुष्यों का कर्तव्य बताया गया है। हदीस है कि हर मुस्लिम मर्द और औरत पर इल्म हासिल करना फर्ज़ है। शिक्षा प्राप्त करने पर इतना बल दिया गया कि मुस्लिम और गैर मुस्लिम की शर्त समाप्त कर दी गई और हुक्म दिया गया कि शिक्षा और हिक्मत के खजाने जहां से मिले हासिल करो। कहा गया है कि बुद्धि, ज्ञान और जानकारी मोमिन का खोया हुआ ख़ज़ाना है। एक हदीस में है कि इल्म हासिल करो चाहे चीन जाना पड़े।

एक हदीस में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने बताया कि इल्म (शिक्षा) मेरा हथियार है। कुर्�आन हकीम में जगह जगह ज़ोर दिया गया है कि प्रकृति पर विजय प्राप्त करो जो विज्ञान और शिक्षा के सिवा सम्भव ही नहीं। यहां यह बिन्दु याद रहे कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नज़दीक विज्ञान का चमत्कार प्राप्त करने का उद्देश्य मानवता की तरक्की तथा उत्थान के लिए है नाकि

मानव संसार को तबाह व बरबाद करने के लिए जैसा कि आजकल हो रहा है। मुहम्मद (सल्ल०) की हदीस (कथन) है कि ‘मुसलमान वह है जिसके हाथ और ज़बान से दूसरे धर्म के मानवे वाले सुरक्षित हों।’

लोक तंत्र (जम्हूरी) शासन की बुन्याद : आप (सल्ल०) ने सामन्तवादी व्यवस्था (शख्सी निजाम) के घमण्ड को मिट्टी में मिला दिया और मजलिसे शूरा (विचार विमर्श समिति) का विचार पेश किया। कुर्�आन मजीद में आदेश दिया गया है कि आप लोगों के विवाद सलाह व मशविरों से तय करें। आप खुद नबी थे लेकिन आपको ईश्वरीय आदेश था कि अपने सहाबा से मशवरा किया करें। इसी से आम सहमति का विचार पैदा हुआ जो लोकतंत्र की जान है।

मानव अधिकार का पहला संविधान (हुकूमे इन्सानी का पहला दस्तूर) : इतिहास गवाह है कि मक्का के कुफ़्फ़ार इस्लाम के कट्टर दुश्मन थे और आप (सल्ल०) के खून के प्यासे थे। आपको परिवार सहित शअबे अबीतालिब में बन्दी बनाकर रखा गया था। फिर वह वक्त भी आया जब अल्लाह के हुक्म से अल्लाह के रसूल मक्के से मदीना चले गये अर्थात हिजरत फरमाई। सभी इमान वालों ने हिजरत फरमाई सिवाय एक दो मजबूरों के। मक्के वालों ने मदीने पर हमले किये बद्र की लड़ाई हुई। उड़द की लड़ाई हुई। लेकिन जब

नजद का सरदार समामा बिन आसाल मुसलमान हुआ तो उसने नजद से आने वाला अनाज बन्द कर दिया। मक्का वाले बिलबिला उठे उन्होंने मुहम्मद (सल्ल०) से प्रार्थना की कि यमामा से अनाज आने की अनुमत दे दीजिये। आप (सल्ल०) को अपने जानी दुश्मनों के भी इंसानी हुकूक का इतना ख्याल था कि आपने तुरन्त समामा को लिखा कि अनाज पहले की तरह भेजा जाए रोका न जाए। इस प्रकार आप (सल्ल०) ने अपने बदतरीन दुश्मनों को भूखों मरने से बचाया।

एक हदीस में आपका कथन बयान किया गया है “तुम मैं से कोई उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि अपने भाई के लिए वही न पसंद करे जो अपने लिए पसंद करता है।”

आपने निर्देश दिया कि मां बाप यदि मुसलमान नहीं हैं तब भी उनकी सहायता की जाए। उन्होंने पड़ोसी के अधिकारों पर बिना किसी धार्मिक भेद भाव के जोर दिया। आप (सल्ल०) ने फरमाया “उसका ईमान पूर्ण नहीं है जिस का पड़ोसी उसकी शरारतों से सुरक्षित नहीं है।” आपने पति—पत्नी, मालिक और सेवक, मां—बाप और औलाद, यतीमों, विधवाओं, बीमारों और बन्दियों के बारे में स्पष्ट शब्दों में उनके अधिकारों और कर्तव्यों का एलान किया और अपने जीवन काल में उनका पूरा पालन किया।

अर्थ व्यवस्था का सुधार —

अरब समाज में उस समय व्याज, रिश्वत, मिलावट, चोरबाजारी, कालाबाजारी आदि बुराइयां व्याप्त थीं। उन्होंने पूँजी व्यवस्था में सुधार किया मेहनत मज़दूरी करने वालों के सम्मान को बहाल किया। एक सहाबी मिट्टी खोद रहे थे कि अपने लिए रोजी हासिल करें। उनके

हाथ मिट्टी में सने हुए थे आप (सल्ल०) ने उन का हाथ अपने हाथ में लिया और उसे चूमा और कहा मुझे इन हाथों से जन्मत की खुशबू आ रही है।

न्यायिक बराबरी : आप (सल्ल०) के सामने फ़ात्मा बिन्ते असदनामी औरत की चोरी का एक मुकदमा पेश हुआ जो बनी मरबज़म के क़बीले की एक इज़्ज़तदार महिला थीं। उनके पिता क़बीले के सरदार थे। इस क़बीले के लोगों को डर था कि कहीं उनके हाथ काटने का आदेश न दे दिया जाए। उन्होंने हज़र असामा बिन ज़ैद से, जो रसूलुल्लाह अलैहि वसल्लम के बहुत निकट थे, सिफारिश कराई। इस प्रार्थना पर आप (सल्ल०) बहुत नाराज़ हुए और फरमाया अल्लाह के निर्धारित कानून के खिलाफ़ तुम सिफारिश कर रहे हो। लोगों को जमा किया और उनको सम्बोधित करते हुए फरमाया “उस जात की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है, यदि फ़ात्मा बिन्ते असद के स्थान पर फ़ात्मा बिन्ते मुहम्मद चोरी करती तो मैं अवश्य उसका हाथ काट देता।” चुनानचे उस महिला का हाथ काट दिया गया और फिर वह एक निहायत दीनदार और एक धार्मिक विचार धारा वाली महिला बन गई।

बिना खूनख़राबे के इन्क़िलाब : आंहज़रत सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम के जीवन काल में कुल इक्यासी (८१) युद्ध हुए जिस में आप केवल सत्ताइस में शामिल हुए युद्धों में गैर मुस्लिमों के मारे जाने वालों की संख्या ७५६ और मुसलमानों की संख्या २५६ है अर्थात् कुल संख्या एक हजार अट्ठारह (१०९८) है। इस इन्क़िलाब में, जिसने मानव संसार को सबसे अधिक प्रभावित किया तथा जिसने मक्का के हिंसा, जुल्म और बुराइयों के अन्धकार

को मिटा कर शान्ति दी और इंसानियत के सदमार्ग पर चलने की रोशनी बख़्री, मरने वालों की इतनी कम संख्या इस बात का सबूत है कि यह इन्क़िलाब अवश्य एक गैरखूनी इन्क़िलाब था। इसकी तुलना फ्रांस तथा रूस के इन्क़िलाब से कीजिए जिसमें मरने वालों की संख्या लाखों में बताई जाती है।

जब आप (सल्ल०) ने मक्का पर विजय प्राप्त की तो आप शान्ति व अमन का पैग़ाम लेकर मक्का में दाखिल हुए आपने अपने कट्टर से कट्टर दुश्मनों को माफ़ कर दिया। आपने अमन का एलान करते हुए कहा कि आज शान्ति व अमन का दिवस है। हज़रत अबूसुफियान जो इस्लाम और आप (सल्ल०) के कट्टर दुश्मन थे और जिसकी पत्नी हिन्दा ने अपने गुलाम की सहायता से आप के चचा हज़रत हमज़ा (रज़ि०) की लाश को बूटी बूटी काटा था और कलेजा निकाल कर चबाया था, उनको केवल छमादान ही नहीं दिया बल्कि उनके घर को शान्ति का केन्द्र करार दिया एलान किया कि आज सबके लिए अमान है जो अबू सुफियान के घर में जमा हो जाए।

यही वह उदारता, दूरदर्शिता, उच्च दृष्टिकोण था जिसने अरब प्रायदीप में इस्लाम के बदतरीन दुश्मनों को इस्लाम का बेहतरीन दोस्त बना दिया।

आज तक इतिहास ऐसे छमादान की मिसाल पेश नहीं कर सका इस पर भी यदि कोई यह कहता है कि इस्लाम तलवार के जोर से फैला तो इससे बढ़कर हट धर्मी और क्या हो सकती है।

आप (सल्ल०) नबियों के सिलसिले के आखिरी नबी हैं जिन्होंने अपने पहले आने वाले सभी नबियों की पुष्टि की और जीवन के हर क्षेत्र की रहनुमाई की।

?

आपकी समस्याएँ और उदाहरण

प्रश्न : जब कोई चीज़ बेचे और उसकी खराबी जाहिर न करे तो क्या हुक्म है?

उत्तर : जब कोई चीज़ बेचे तो वाजिब है कि जो कुछ उस में ऐब व खराबी हो सब बतला दे, न बतलाना और धोका दे कर बेच डालना हराम है।

प्रश्न : खरीदने के बाद अगर कोई ऐब निकले तो क्या करे?

उत्तर : जब खरीद चुका तो इसमें कोई ऐब निकले तो अब उस खरीदने वाले को अखिलयार है चाहे रख ले और ले ले चाहे फेर दे लेकिन अगर रख ले तो पूरे दाम देना पड़ेंगे। इस ऐब के बदले में कुछ दाम काट लेना दुरुस्त नहीं है। अगर बेचने वाला राजी हो जाए तो कम करके दाम देना दुरुस्त है।

प्रश्न : कपड़ा खरीदने के बाद कटवा लिया फिर उसका ऐब मालूम हुआ तो क्या वापस कर सकता है?

उत्तर : अगर कपड़ा खरीदने के बाद कटवा लिया तब ऐब मालूम हुआ तो अब फेर नहीं सकता मगर दाम कम कर दिये जाएंगे लेकिन अगर बेचने वाला कहे कि मैं कटा हुआ नहीं लूंगा तो उसको अखिलयार है कि वह इन्कार कर दे।

प्रश्न : किसी ने अण्डे खरीदे और सभी अण्डे गण्डे निकल गये तो क्या वापस कर सकता है?

उत्तर : किसी ने अण्डे खरीदे, जब तोड़े तो सब गण्डे निकले तो सारे दाम

फेर सकता है और अगर कुछ गण्डे निकले और कुछ अच्छे तो गण्डों के दाम फेर सकता है।

प्रश्न : अगर बेचते वक्त किसी ने कहा कि खूब देख भाल लो अगर उसमें कुछ ऐब निकले या खराब हो तो मैं जिम्मेदार नहीं? तो क्या ऐब निकलने पर उसे वापस लेना होगा।

उत्तर : बेचते वक्त उसने कह दिया कि खूब देख भाल लो अगर उसमें कुछ ऐब निकले या खराब होतो मैं जिम्मेदार नहीं उस कहने पर उसने ले लिया तो अब चाहे जितने ऐब उसमें निकले फेरने का अखिलयार नहीं है और इस तरह बेचना भी दुरुस्त है।

प्रश्न : किसी जमीन पर अगर घास ऊग जाये और उसको काटना चाहे तो काट सकता है या नहीं?

उत्तर : किसी जमीन में खुद घास ऊग गई तो यह घास किसी की मिल्क नहीं है जिसका जी चाहे काट ले जाये, न उसका बेचना दुरुस्त है और न काटने से किसी को मना करना दुरुस्त है मगर अगर बोया हो या पानी देकर सीधा हो तो उसकी मिल्क हो जायेगी अब बेचना भी जायज़ है और लोगों को मना करना भी दुरुस्त है।

प्रश्न : जानवर के पेट में जो बच्चा है पैदा होने से पहले उस बच्चे का बेचना बातिल है और अगर पूरा जानवर बेच दिया तो दुरुस्त है या नहीं?

उत्तर : जानवर के पेट में जो बच्चा

मुहम्मद सरवर फारूकी नदवी

है पैदा होने से पहले उस बच्चे का बेचना बातिल है और अगर पूरा जानवर बेच दिया तो दुरुस्त है लेकिन अगर यह कह दिया कि बच्चा जब पैदा हो तो वह मेरा है तो यह बैअ फासिद है।

प्रश्न : अमानत पर अगर कोई शख्स कोई सामान रखवाए तो उस का क्या हुक्म है?

उत्तर : किसी ने कोई चीज़ बतौर अमानत रखी और वह आप ले ली तो अब उसकी हिफाज़त करना आप पर वाजिब हो गया। अगर हिफाज़त में कमी और गफलत की और वह चीज़ जाए हो गई तो उसका बदला देना पड़ेगा हाँ अगर हिफाज़त में कोताही नहीं हुई। फिर भी किसी वजह से जाती है जैसे चोरी हो गई या घर में आग लग गई और उस में जल गई तो उसका बदला वह नहीं ले सकता बल्कि अमानत रखते वक्त यह इकरार कर लिया कि अगर जाती रही तो मैं जिम्मेदार हूं मुझसे दाम लेना, तब भी उसको तावान लेने का हक़ नहीं यूं अपनी खुशी से दे दे वह और बात है।

प्रश्न : कोई शख्स थोड़ी देर के लिए कोई सामान रखवा दिया तो उसका क्या हुक्म है?

उत्तर : किसी ने कहा मैं थोड़ा काम से जाता हूं मेरी यह चीज़ रख लो आपने कहा अच्छा रख दो या आप कुछ नहीं बोले वह आपके पास रखकर चला गया तो अमानत हो गई। हाँ

अगर आप ने यह कह दिया कि मैं नहीं जानता और किसी के पास रख दो या और कुछ कह कर इन्कार कर दिया फिर भी रख कर चला गया तो अब वह चीज़ आपकी अमानत में नहीं है हाँ अगर उसके चले जाने के बाद आप ने उठा कर रख ली तो अमानत हो जाएगी।

प्रश्न : अगर कोई रूपये पैसे बताए अमानत रखवाये तो क्या वही रूपया वापस करना ज़रूरी है या फिर बदल भी सकते हैं?

उत्तर : अगर किसी ने कुछ रूपये पैसे अमानत रखवाए तो ठीक उन्हीं रूपयों पैसों का हिफाज़त से रखना बाजिब है, न तो अपने रूपयों में उनका मिलाना जायज़ है और न उनका खर्च करना जायज़ है, यह न समझे कि रूपया-रूपया सब बराबर है लाओ इसको खर्च कर डालो जब मांगेंगे तो अपने पास से रूपया दे देंगे। हाँ अगर उस ने इजाज़त दे दी तो ऐसी सूरत में खर्च करना दुरुस्त है लेकिन उसका हुक्म यह है कि अगर वही रूपया आप अलग रहने दें तब वह रूपया अमानत समझा जाएगा अगर जाता रहा तो तावान न देना पड़ेगा। अगर आपने इजाज़त लेकर खर्च कर दिया तो अब वह आपके ज़िम्मे कर्ज़ हो गया अमानत नहीं रहा लिहाज़ा अब हर हाल में देना ही पड़ेगा।

प्रश्न : किसी ने अमानत के तौर पर भैंस या बकरी आदि रखवाई तो उसका दूध पीना या किसी तरह उससे काम लेना दुरुस्त नहीं मगर इजाज़त से यह सब जायज़ है बिना इजाज़त जितना दूध लिया है उसके दाम देने पड़ेंगे।

प्रश्न : अमानत कब वापस करें?

उत्तर : जब वह अमानत मांगे तो तुरन्त उसको दे देना बाजिब है बिना उज्ज न देना और देर करना जायज़ नहीं किसी ने अपनी अमानत मांगी आप ने कहा भाई इस वक्त हाथ खाली नहीं कल ले लेना उसने कहा अच्छा कल ही सही तब तो खैर कुछ हर्ज नहीं और अगर वह कल के लेने पर राजी न हुआ और न देने से खफा हो कर चला गया तो अब वह चीज़ अमानत नहीं रही अगर वह चीज़ खोती है तो बदला देना पड़ेगा।

प्रश्न : इसी तरह जो दस्तूर है कि लोग बैआना दे देते हैं अगर वह चीज़ नहीं ली तो बैआना ज़ब्त हो जाता है?

उत्तर : इस तरह दुरुस्त नहीं बैआना वापस करना चाहिए।

प्रश्न : अगर किसी ने किराये पर कोई घर लिया वह बहुत टपकता है तो क्या करे?

उत्तर : अगर किराये पर घर लिया और वह टपकता हो या कुछ हिस्सा उसका गिर गया हो और कोई ऐसा ऐब निकल आये जिससे अब रहना मुश्किल हो तो किराये का मुआहिदा तोड़ देना दुरुस्त है। और अगर बिलकुल ही गिर पड़ा तो खुद ही मुआहिदा टूट गया तुम्हारे तोड़ने और मालिक के राजी होने की ज़रूरत नहीं रही।

प्रश्न : किसी की बिना इजाज़त के कोई चीज़ ले लेने का क्या मसला है?

उत्तर : किसी की चीज़ ज़बरदस्ती ले लेना या पीठ पीछे उसकी बिना इजाज़त के ले लेना बड़ा गुनाह है कुछ औरतें अपने शौहर या और किसी करीबी रिश्तेदार की चीज़ बिना इजाज़त ले लेती है यह भी दुरुस्त नहीं है जो चीज़ बिना इजाज़त ले ली है तो अगर

वह चीज़ अभी मौजूद हो तो ठीक वही फेर देना चाहिए और अगर खर्च हो गई हो तो उस का हुक्म यह है कि अगर ऐसी चीज़ थी कि उस जैसी बाज़ार में मिल सकती है जैसे गल्ला, धी, तेल, रूपया, पैसा तो जैसी चीज़ ली है वैसी ही चीज़ मंगाकर दे देना बाजिब है, और अगर कोई ऐसी चीज़ लेकर खत्म कर दी कि उस के जैसी मिलना मुश्किल है तो उसकी कीमत देना पड़ेगी जैसे मुर्गी, बकरी, अमरुद, नारंगी आदि।

इसी तरह अगर दूसरे के रूपये से बिना इजाज़त तिजारत की तो उससे जो फायदा हो उसका लेना सही नहीं बल्कि अस्ल रु० मालिक को वापस दे और जो कुछ फायदा हो उसको ऐसे लोगों को ख़ेरात कर दे जो बहुत मुहताज हों।

इसी तरह सुई, धागा, बीड़ी सिग्रेट, पान आदि किसी की चीज़ बिना इजाज़त लेना दुरुस्त नहीं है और जो लिया है उसके दाम देना बाजिब है या फिर उससे कहकर माफ करा ले।

प्रश्न : नमाज़ जुमा के खुत्बे के वक्त लोगों को देखा जाता है कि लोग नमाज़ पढ़ा करते हैं तो क्या उस वक्त इस तरह का कोई अमल करना चाहिए?

उत्तर : जब इमाम खुत्बा के लिए खड़ा हो उस वक्त कोई नमाज़ पढ़ना या आपस में बात चीत करना मकरुह तहरीमी है हाँ क़ज़ा नमाज़ का पढ़ना साहिबे तर्तीब के लिए उस वक्त भी जाइज़ बल्कि बाजिब है।

इसी तरह खुत्बा के वक्त कोई ऐसा काम करना जो सुनने में हारिज हो। मकरुह तहरीमी है और खाना,

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

छात्रों से सम्बन्धित छात्रों

अबू मर्गुब

पवित्र कुर्�आन से साबित है कि शैतान जादू (सिहर) जानते थे, करते थे और इन्सानों में फैलाते थे। अर्थात् जादू विद्या (सिहर का इल्म) शैतानों में है।

हडीस से सिद्ध है कि शैतान सिहर द्वारा इन्सानों को शारीरिक नुक़सान भी पहुंचा सकते हैं। अर्थात् कोई किसी पर जादू करे तो शैतान जादू किये जाने वाले को हानि पहुंचा सकते हैं। यह भी हडीस से सिद्ध है कि अजूजू बिल्लाह, आयतुलकुर्सी और मुअव्विज़तैन पढ़ने वाला सिहर (जादू) से सुरक्षित रह सकता है।

वह जादू जिस में शैतानों से मदद ली जाती है या नक्षत्रों से सहायता मांगी जाती है शिर्क है। शैतान उसके बदले में कुछ आश्चर्यजनक बातें प्रस्तुत कर देता है।

ख़्याल आता है कि इन्सान तो जादू करके शैतान से सहयोग मांगने का गुनाह करता है। शैतान अपने जादू में किस से सहायता चाहता होगा, इस विषय में स्पष्ट ज्ञान हम इन्सानों को नहीं बताया गया। सम्भव है शयातीन कम ज़ियादा योग्यता वाले होंगे और अधिक योग्यता वाले कम योग्यता वालों की सहायता करते होंगे। यह भी मुस्किन है कि जादू के कुछ शब्दों में या जादू के अमलों में अल्लाह तआला ने हानिकारक अवगुण रख दिये होंगे जैसे संख्या, अफ्यून, और विष में जान लेने या कष्ट देने की शक्ति रख दी।

कोई किसी पर जादू करे तो हो सकता है उस पर जादू का प्रभाव पड़े और हो सकता है न पड़े लेकिन जादू के काट के लिए मुअव्विज़तैन अर्थात् कुलअबूजू बिरब्बिल फ़लक और कुलअबूजू बिरब्बिन्नास का लाभ विश्वासनीय है। तमाम मुसलमानों को चाहिए कि नमाज़ों के पश्चात मुअव्विज़तैन पढ़ लिया करें और न जादू से डरें न अमिलों के चक्कर में पड़ें।

एक ख़्याल यह भी आता है कि जो जादू हारूत व मारूत फिरिश्तों को दिया गया था क्या उसमें भी शिर्क व कुफ़ के वाक्य होंगे? मेरा अपना विचार यह है कि उनमें शिर्क व कुफ़ न होगा बल्कि संख्या जैसा असर होगा कि जिस को प्रयोग करा दें उसको हानि पहुंच जाए इसीलिए उनका सीखना वर्जित हुआ।

इसमें सन्देह नहीं कि जिस प्रकार इन्सानों ने जादू सीखा और काम में लाकर कुफ़ किया उसी प्रकार मुस्लिम जिन्नों ने जादू सीखकर और जादू करके कुफ़ किया होगा वल्लाहु अल्लम।

जो मुसलमान जिन्न कुछ जाप तथा कर्म द्वारा अपनी शक्ति बदल लेते हैं उन जाप शब्दों और कर्मों को जादू नहीं कहा जा सकता वह तो एक शुद्ध ज्ञान होगा जो अल्लाह की ओर से उनको प्रदान हुआ।

कुछ शब्द या वाक्य जिन का अर्थ ज्ञात हो और उनमें कुफ़ व शिर्क

न हो और उनके पढ़ने से स्पष्ट रूप में लाभ पहुंचता हो तो अवश्य वह किसी न किसी नबी द्वारा मनुष्यों तथा जिन्नों को मिले होंगे। जो अल्लाह के सिखाए हुए होंगे। इन शब्दों तथा वाक्यों को भी जादू नहीं कहा जा सकता।

रोग को जादू समझना मूर्खता है। मेरी जानकारी में ऐसे कई लोग हैं जिनको डाक्टरों ने बताया कि तुम को रोग है परन्तु वह भ्रमी अपने को जादू से पीड़ित ही मानते रहे दूसरे भ्रमी भी उनकी पुष्टि करते रहे नतीजा यह हुआ कि वह आमिल और ओझा के पीछे पड़े रहे यहाँ तक कि इस दुन्या से चल बसे।

निःसन्देह जादू है परन्तु रोग को जादू का प्रभाव समझना, बताना मूर्खता है। अल्लाह समझ दे।

नागपुर सेन्ट्रल जेल के एक कैदी का पत्र सम्पादक के नाम

अल्लाह के नाम से जनाब सम्पादक साहब

इन तकलीफ के दिनों में आप की जानिब से रवाना की जा रही मासिक पत्रिका अहम रोल अदा कर रही है ख्वाहिश तो बहुत पहिले हो रही थी कि आप को कुछ लिखूं लेकिन कुछ मसलफ़ियत और कुछ ज़हनी यक़सूर्ई की कमी की वजह से न लिख सका उम्मीद है कि छोटा भाई समझ कर दरगुजर करेंगे।

इन दिनों को बहुस्न व खूबी गुजारने में आपकी पत्रिका का बेहतरीन ताज़न है। अल्लाह आपको इसका अज्ज दे।

चलता फिरता कैद खाना या शैतानी धोखा

इस्लाम ने समाज को आपसी बिगड़ से बचाने के लिए औरत को हुक्म दिया है कि ऐसा कपड़ा और ऐसा हाल न बनाये कि दूसरे मर्दों की नज़रें उस पर उठें, जिसके कारण समाज में लोगों की बुरी नियत पैदा हो और समाज में बिगड़ पैदा हो, इसलिए पर्दे का हुक्म इस प्रकार दिया गया है कि औरत इस तरह चादर या कपड़े में अपने आपको मर्दों के सामने छिपाये रखें कि वह मर्दों को आकर्षित न करती हो, इसके लिए घर से निकलने पर चादर हो या कोई ऐसा कपड़ा या बुर्का हो जिससे यह मक्सद पूरा हो इसे खुद उसकी समझ पर छोड़ दिया गया है जिसे उलमा ने आसानी के लिए बुर्का के रूप में बना दिया है, परन्तु इसी प्रकार का बुर्का कोई अनिवार्य नहीं यह कपड़ा कैसा ही हो मक्सद पूरा होना चाहिए और वह यह है कि औरत को मर्दों के सामने आते समय ऊपर से ऐसा कपड़ा पहनना चाहिए कि दूसरे मर्दों की नज़रें उसकी ओर आकर्षित न हो।

अल्लाह तआला ने मुसलमान औरत को बुर्का का हुक्म देकर यह समझा दिया है कि उनके लिए क्या मना और क्या अनिवार्य है, कुर्�আন में अल्लाह का इशार्द है, ‘‘हम किसी व्यक्ति को उसकी ताक़त से अधिक दुख नहीं देते, और हमारे पास एक किताब है जो (हर एक का हाल) ठीक-ठीक बता देने वाली है और उन लोगों पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।’’ (२३-६२)

दुर्भाग्य की बात यह है कि शैतान और उसकी सन्तान ने औरत को अल्लाह की सृष्टि का गुलाम और अल्लाह के बताए हुए नेक काम को भूल जाने की दअवत दी है शर्म व हया पाकीज़गी और हमदर्दी ऐसी पाबन्दियां हैं जैसे इन्सानी आज़ादी के लिए हथकड़ी, अल्लाह ईमान वालों को सचेत करता है कि वह सतर्क रहें ताकि शैतान फैशन, कल्वर और नये ज़माने की आड़ में इस प्रकार धोखा न दे सके जैसे उसने उनके माता-पिता आदम और हब्बा को दिया था, फिर भी शैतान औरतों को बेहयाई वाले काम करवाने में कामियाब है, शिष्टाचार की शुरूआत लम्बे कपड़े और सर को ढांकना ही है अल्लाह के हुक्म को मानना है इसके शर्म व हया और पाकीज़गी की झलक मिलती है कुर्�আন की कुछ आयतें इस का उपदेश देती हैं “ऐ औलादे आदम! हमने तुम पर लिबास नाज़िल किया है कि तुम्हारे जिस्म को काबिले शर्म (छिपाने की जगह) हिस्सों को ढांके और तुम्हारे लिए जिस्म की हिफाज़त (रक्षा) और ज़ीनत (शोभा) का ज़रिया भी हो, और बेहतरी लिबास तक़वा (परहेज़गारी) का लिबास है। (काफ़-६-२६)

परन्तु आज़ादी के आन्दोलन ने शुरू से ही मुस्लिम औरतों के समाज और कपड़ा के सम्बन्ध में छान-बीन ने बहुत बदलाव सा कर दिया है आज़ादी का विचार रखने वाली औरत के अनुसार पर्दा केवल सर को ही नहीं ढांकता

सादिका तस्नीम फारूकी

बल्कि दिमाग़, हौसला और इरादे भी छिपा लेता है, इल्म न होने के कारण उनका भी कहना है कि हमारा पर्दा नये ज़माने से सम्बन्ध नहीं रखता है, जबकि आज की दुनिया में बराबर अच्छे आचरण की गिरावट आयी है आज—कल के हालात को देखते हुए पर्दा और ही ज़रूरी हो गया है। वह औरतें जो अपनी चमक—दमक के प्रदर्शन और शरीर की नुमाइश करके आम आदमी को आनन्दित करने के लिए अपनी ओर आकर्षित करती है वह अपने आप को खुद इन्सान जैसे भेड़ियों को जिंसी हिंसा की ओर दअवत देती हैं अल्लाह तआला ने मुसलमान औरत को पर्दा के जरिये इस नुक़सान से बचाव कर दिया, वह अपनी मख्लूक को हम सबसे ज्यादा अच्छी तरह जानता है और उसका कार्य यह भी है कि जब औरत नज़रों को चौंधिया देने वाली नग्न कपड़े, खूबसूरत शरीर और चेहरा का बनाव सिंहार के साथ निकलती है तो वह जिंसी हिंसा की बढ़ोतरी करती हैं। उनमें बहुत सी ऐसी औरतें, जिनको गुमराह किया गया है उनका विचार है कि पर्दा एक चलता फिरता कैद खाना है जिसमें हमारे जिन्दगियों, दिमागों, और दिलों को कैद कर दिया गया है, हालांकि ऐसी कोई चीज़ नहीं है, इस साज़िश के शिकार होने से बचने के लिए हमारे लिए यह ज़रूरी हो गया है कि यह समझने की कोशिश करें कि पर्दा वास्तव में क्या है।

इस्लाम में पति और पत्नी यह

कोशिश करते हैं कि वह एक—दूसरे को अच्छे और खूबसूरत दिखाई दें, उसके लिए वह जो बनते संवरते और सजावट करते हैं उससे रिश्ता में पाकीज़गी, शर्म व हया और सुशीलता आती है, मुसलमान पर यह आरोप है कि वह इन्सानी शरीर के बारे में ज़रूरत से ज्यादा लज्जित होते हैं, मगर आज—कल जिस तेज़ी से जिन्सी हिंसा बढ़ रही है। उदाहरण के तौर पर छोटो स्क्रेट पहनने वालियां मर्दों को यह सिगनल देती हैं कि वह उनके काबिल हैं इसी तरह पर्दा ऊँची आवाज़ से यह सिगनल देता है कि मैं मर्दों के पहुंचाव से दूर हूँ। रसूल (सल्ल०) ने अपनी साहबज़ादी हज़रत फातिमा (रह०) से फ़रमाया औरत के लिए अच्छी चीज़ कौन सी है उन्होंने कहा न वह मर्दों को देखे और न ही मर्द उनको देख सकें। रसूल (सल्ल०) खुश हुए और फ़रमाया कि तुम सही मानों में मेरी बेटी ही, इससे पता चलता है कि औरतों का घर ही में ठहरना अच्छा है, अनजान मर्दों से जहां तक संभव हो सम्बन्ध रखने और मिलने से परहेज़ करना चाहिए, पर्दा का प्रबन्ध कर के घर से बाहर जाने पर भी यही असर होता है।

हां इस्लाम ने औरतों को ज़रूरत पड़ने पर घर से बाहर निकलने या काम करने में कोई रोक—टोक नहीं रखा, परन्तु ऐसा करना शर्म व हया को पूरी तरह सामने रखते हुए करना होगा जैसा कि इस्लामी इतिहास में औरतों ने शिक्षा व दीक्षा में बराबर हिस्सा लिया है पढ़ा भी है और पढ़ाया भी है औरतें बड़ी—बड़ी ज्ञानी भी हुई हैं, खुद भी इल्म व हुनर हासिल किया और दूसरों को भी फायदा पहुंचाया है,

इस्लामी शिक्षा में भी औरतें माहिर हुई हैं और दूसरों को भी फायदा पहुंचायी हैं, नर्स के काम भी औरतों ने किये हैं जैसे खुद हुजूर (सल्ल०) ने ज़खिमयों की देख—रेख के लिए ज़िम्मेदारी औरतों पर डाली थी।

एक एजेंसी से ख़त

अस्सलाम अलै कुम व रहमतुल्लाहि वबरकातु अल्हम्दु लिल्लाह सच्चा राही की बीस कापियां आसानी से निकल जाती हैं। इसी वजह कर आइन्दा से पचीस कापी भेजने का आर्डर भेजा है। उम्मीद है कि आइन्दा २५ कापियां भेजेंगे। एक बात आम तौर से कही जाती है कि इस के अलफ़ाज़ संस्कृत से मिलते जुलते सख्त किस्म के इस्तिअमाल होते हैं जिनसे आमतन मुस्लिम ना आशना होते हैं बआसानी उस को समझना दुशवार होता है अगर आसान अलफाज का इस्तिअमाल हो तो हर के लिए समझना आसान हो। एक साहब ने मुझ से कहा कि आप एडीटर साहब को आसान करने का मशवरा दीजिए या मेरा परचा बन्द कर दीजिए। (मुहम्मद कुरबान अली कासिमी)

मुकर्मी जनाब मौलाना कासिमी साहिब व अलै कुमुस्सलामु 'व रहमतुल्लाहि व बरकातु आप का खत पढ़कर खुशी हुई कि आप की एजेन्सी तरक्की कर रही है और आप के ज़रीओं "सच्चा राही" पढ़ने वाले बढ़ रहे हैं। अल्लाह तआला आप की कोशिशों में इजाफा फरमाए और आप की एजेन्सी खूब तरक्की करे।

जिन साहिब ने एडीटर को मशवरे की मांग की है आप के शुक्रिये के साथ उन का भी बहुत बहुत शुक्रिया, उनका मशवरा सर आखों पर। वह खफ़ा होकर परचा बन्द कर देंगे तो फिर हम को मशवरा कौन देगा। उनके मालूम होगा हम इससे पहले भी अपने लिखने वालों से आसान लिखने की दरखास्त कर चुके हैं फिर खत छापर कर उनको तवज्जुह दिला रहे हैं। इंशा अल्लाह और आसान करने की कोशिश करेंगे लेकिन इतना ज़रूर कहेंग कि जो परचे हिन्दी के हमारी निगाहों से गुज़रते हैं उन में यह सब से सहल है।

0522-264646

Bombay Jewellers

The Complete Gold & Silver Shop

84, Victoria Street,
Akbari Gate, Lucknow.

0522-256005

M.A. Saree Bhandar

*Manufacturer & Supplier of :
Chikan Sarees
& Suit Pieces*

In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

केला एक पौष्टिक आहार

मुजफ्फर हुसैन

केला पौष्टिक अंशों से भरा हुआ एक प्रसिद्ध और पसन्दीदा फल है। भारत में इसकी पैदावार प्राचीन काल से होती चली आ रही है। ५०० साल ईसा पूर्व बौद्ध धर्म ग्रन्थों में केले की पैदावार का वर्णन मिलता है। पैदावार के लिहाज से अमरीकी देशों का स्थान सर्वप्रथम है। केले की पैदावार में ब्राजील का स्थान सबसे ऊपर है। दूसरे स्थान पर युगेंडा और तीसरे पर भारत का नम्बर है।

भारत के केरल प्रांत में केले की खेती बड़े पैमाने पर होती है। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र, तमिलनाडू, गुजरात, बिहार, आसाम, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, उड़ीसा और पश्चिमी बंगाल में केले की अच्छी उपज होती है। बिहार के हाजीपुर में जो केला उगाया जाता है वह अपनी सुगन्ध, मिठास और मज़े के लिए संसार भर में प्रसिद्ध है।

केला यूं तो विभिन्न प्रकार की जलवायु में लगाया जा सकता है, परन्तु गर्म और नम जलवायु इसके लिए अधिक उपयुक्त है। भारत में केले की कई किस्में विभिन्न प्रांतों में लगाई जाती हैं। केले के लगाने या रोपने का समय अलग अलग क्षेत्रों में अलग अलग है। जैसे उत्तरी भारत में वर्षा ऋतु, में, दक्षिणी भारत में जाड़ों में और महाराष्ट्र में मार्च अप्रैल में लगाया जाता है।

पका हुआ केला पौष्टिक अंशों का भण्डार है। केले में कार्बोहाइड्रेट २२.२ प्रतिशत प्रोटीन १.१ प्रतिशत

चिकनाई २ प्रतिशत, पानी ७५.५ प्रतिशत और अन्य अंश १ प्रतिशत होते हैं।

केले का तना बहुत कोमल और कमज़ोर होता है उसके पत्ते लम्बे चौड़े होते हैं। इनमें टहनियां नहीं होतीं। इसकी जड़ों से नई जड़ें नये पौधे के रूप में फूटती हैं। एक पौधा एक बार से अधिक फल नहीं देता।

केला पौष्टिक परन्तु देर में हज़म होने वाला फल है। इसके बराबर प्रयोग से शरीर मोटाताज़ा हो जाता है। गर्म मिजाज लोगों के लिए यह बहुत लाभदायक है। इसके प्रयोग से गुर्दे की कम्ज़ोरी दूर हो जाती है सूखी खांसी जाती रहती है और हलक की चुभन मिट जाती है। इस के प्रयोग से नीद न आने की शिकायत, कब्ज़, पेशाब की जलन दूर हो जाती है। केले के अन्दर का नीला मुलायम रेशा कब्ज़ दूर करके आंतों को क्रियाशील रखता है। नियमित रूप से केले के प्रयोग से कम्ज़ोर लोगों की पाचन शक्ति ठीक हो जाती है। प्रातः नाश्ते में केला खा कर दूध पीना एक पौष्टिक आहार है। ऐसे लोगों को केला नहीं खाना चाहिए जिन का मिजाज बलगमी हो या जिन्हें रियाही तकलीफ हो। यदि वह कभी केला खाएं तो उसके विकार को दूर करने के लिए सोंठ नमक और शहद का प्रयोग अवश्य करें।

केले में नशास्ता (गेहूं का सत) और शकर अधिक होती है। ठोस पौष्टिक तत्व और विटामिन के दृष्टकोण

से केला सब से अधिक लाभप्रद फलों में से है। इसमें विटामिन ए, बी और सी बहुत अधिक पाये जाते हैं इस के अतिरिक्त थोड़ी मात्रा में विटामिन डी और ई भी पाया जाते हैं। मनुष्य के शरीर को जिस मात्रा में आयोडीन की आवश्यकता होती है उसे केला पूरा करता है। केला उन लोगों के लिए भी लाभदायक है जो गुर्दे की बीमारी से ग्रस्त होते हैं।

केला अति अधिक प्रयोग किया जाने वाला और आसानी से मिलने वाला फल है। यह ताकत और खून पैदा करता है। दस्त, पेचिस, सिंग्रहनी, जिर्यान और सपनदोष को दूर करता है। केला खाकर ऊपर से शहद मिला हुआ दूध पीना औरतों के सफेद पानी (लिकोरिया) को रोकता है लेकिन कुछ काबिज़ और देर में पचने वाला है इसलिए बलगम पैदा करता है।

केला खाने का बेहतरीन तरीका यह है कि केले को छोटे छोटे टुकड़े काट लिया जायें और उसमें पिसी हुई शकर मिला कर लीमू निचोड़ लें। केले को खूब धीरे धीरे चबाकर पानी सा बनाकर हलक से नीचे उतारना चाहिए। कमज़ोर मेदे वालों को इसके प्रयोग में सावधानी बरतनी चाहिए।

कच्चे केले को भून कर तल कर और सब्ज़ी बनाकर भी खाया जाता है। आलू की तरह कच्चे केले की चिप्स भी तल कर खाए जाते हैं। दक्षिणी भारत में पक्के केले से नाना प्रकार की मिठाइयां और पकवान बनाए जाते हैं।

तिष्ठे नबी

चिकित्सा और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

कोई रोग ऐसा नहीं जिसका इलाज नहीं :

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्ला रज़ि० बयान करते हैं कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया “हर बीमारी के लिये दवा है, जब दवा बीमारी के अनुकूल मिल जाती है तो बीमार अल्लाह के हुक्म से स्वस्थ हो जाता है। (मुस्लिम शरीफ)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० रवायत करते हैं कि हज़रत रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला ने कोई बीमारी ऐसी नहीं पैदा की जिसके लिये शिफा (रोग से छुटकारा) न उतार दी हो (बुखारी शरीफ, मुस्लिम शरीफ)

इन हदीसों से तीन बातें व्यक्त होती हैं, एक यह कि बीमारी अल्लाह की ओर से है, इसलिये उसका शिकवह शिकायत उचित नहीं बीमारी हमारी जांच और परीक्षा के लिए होगी या मदारिज की उन्नति के लिए।

दूसरे यह कि कोई रोग ऐसा नहीं जिसका इलाज नहीं शाफि-ए-मुतलक (अल्लाह तआला) ने हर बीमारी के साथ उसका इलाज पैदा कर दिया है। अतः किसी हाल में इलाज चिकित्सा को छोड़ना उचित नहीं और शिफायाबी (स्वस्थ होने) से मायूस होना जायज नहीं।

तीसरे यह कि प्रत्येक रोग का इलाज विशेष है अर्थात् यदि किसी दवा से आराम न मिले तो हमें यह बात

ध्यान में रखनी चाहिए कि इस रोग की विशेष दवा प्रयोग में नहीं आई शाफि-ए-मुतलक (अल्लाह तआला) से उस दवा की तौफीक मांगें और शिफा की उम्मीद रखें।

केवल एक रोग लाइलाज है—

हज़रत उसामा बिन शरीक से हज़रत ज़ियाद बिन इलाक़ा रज़ि० रवायत करते हैं कि मैं हज़रत रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में मौजूद था, कुछ बदू (देहाती) आपकी सेवा में उपस्थित हुए और उन्होंने प्रश्न किया या रसूलुल्लाह ! अगर हम इलाज न करें तो क्या हम पर कुछ गुनाह होगा? नबी करीम स०अ० ने फरमाया :

हाँ, अल्लाह के बन्दो ! तुम इलाज किया करो, बुजुर्ग और महान अल्लाह ने एक के अतिरिक्त कोई ऐसी बीमारी नहीं पैदा की जिसकी “शिफा” न पैदा की हो और जिसका इलाज नहीं। उन्होंने मालूम किया, या रसूलुल्लाह ! वह कौन सी बीमारी है ? हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया “वह बुढ़ापा है” (सुनन अबू दाऊद, तिरमिजी, निसर्ई, इब्नमाजा, हाकिम)

इस पवित्र हदीस से तीन महत्वपूर्ण बातें हमें मालूम होती हैं —

प्रथम, बुढ़ापे के अतिरिक्त हर बीमारी, इलाज के योग्य है। किसी बीमारी में निराश होना जायज़ नहीं।

दूसरे यह कि इलाज और

चिकित्सा करवाना नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत (तरीक़ा) है, इससे मुंह मोड़ना, हुजूर सल्ल० अलैहि वसल्लम के खुले फरमान की मुखालिफ़त होगी।

तीसरे यह कि बुढ़ापे में जवानी के खुवाब (स्वप्न) देखना एक बेकार (व्यर्थ) काम है। यह वह चीज़ नहीं जो आकर टल जाए, इसलिए इस प्रतिष्ठ स्थान को बड़े हौसले से स्वीकृति कर लेना चाहिए।

इलाज, चिकित्सा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तरीक़ा है।

हाफिज इब्ने कथियम ने अपनी किताब “ज़ादुल मआद” में, हज़रत बिलाल बिन सय्याफ़ रज़ि० से यह रवायत नकल की है। वह बयान करते हैं : कि हज़रत रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक मरीज की इयादत के लिए तशरीफ ले गए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया, हकीम को बुला भेजो, उपस्थित लोगों में से किसी ने, अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल क्या आप यह फरमा रहे हैं ? हुजूर ने फरमाया “हाँ” बेशक, महान और बुजुर्ग अल्लाह ने कोई ऐसी बीमारी नहीं उतारी, जिसकी दवा न भेज दी हो।

किताब मुअत्ता इमाम मालिक, हदीस का प्राचीनतम संग्रह है जिसको इमामे मदीना हज़रत इमाम मालिक रह० ने संकलित किया है, इस संकलन

पढ़ो दुरुद पढ़ो मोमिनो दुरुद पढ़ो

आसी लखनवी

खुदा की रहमतें जिस जात पर मुसलसल हैं बरस्ती रहमतें जिस जात पर मुसलसल हैं तरस्ती आंखें ये जिस जात को मुसलसल हैं दुरुद हमारे भी उस जात पर मुसलसल हैं पढ़ो दुरुद पढ़ो मोमिनो दुरुद पढ़ो। खुदा का हुक्म है ऐ मोमिनो दुरुद पढ़ो

खुदा का हुक्म है हुजूर पर सलाम पढ़ो। खुदा तौफीक दे दुरुद सुबहो शाम पढ़ो पढ़ो खलवत में या जलवत में तुम मुदाम पढ़ो खड़े होकर पढ़ो या बैठ कर सलाम पढ़ो बचो विद्वान् से और सुन्नत को बस तुम आम करो खुदा का हुक्म है ऐ मोमिनो सलाम पढ़ो

कहो तुम शौक से यूं या नबी तुम पर सलाम कहो या यूं खुदाया भेज आका पर सलाम फिरिश्ते लेके जाते हैं नबी तक हर सलाम और अदब से पेश कर देते हैं वह उन पर सलाम पढ़ो सलाम पढ़ो ऐ मोमिनो सलाम पढ़ो खुदा का हुक्म है ऐ मोमिनो सलाम पढ़ो

खुदा रहमत करे हुजूर पर रहमत करे और उनकी आल पर अस्हाब पर रहमत करे फिर उन के पैरवों पर भी खुदा रहमत करे करम से अपने हम सब पर खुदा रहमत करे पढ़ो दुरुद पढ़ो ऐ मोमिनो दुरुद पढ़ो खुदा का हुक्म है ऐ मोमिनो दुरुद पढ़ो

किस कुदर इहसान है हम पर खुदाए पाक का मुत्तविअ हम को किया अपने रसूले पाक का है महब्बत उन की वाजिब उनसे हम उलफत करें और उनको भेजें हम तुहफा दुरुदे पाक का पढ़ो दुरुद पढ़ो ऐ मोमिनो दुरुद पढ़ो खुदा का हुक्म है ऐ मोमिनो दुरुद पढ़ो

सच्चाराही मई 2004

‘की इस हदीसे पाक से साफ़ स्पष्ट है कि अल्लाह के अन्तिम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने चिकित्सा कराने का आदेश दिया और रोगी को चाहिए कि चिकित्सक के पास जाए और अपना इलाज कराए।

इस आदेश नबवी से दो सारांश सामने आए एक यह कि इलाज कराना तवक्कुल (केवल अल्लाह पर भरोसा करना) के विरुद्ध नहीं, बल्कि सुन्नते नबवी के अनुकूल है, दूसरे यह कि शिफा (स्वस्थ्य होना) दवा की अपनी विशेषता नहीं, बल्कि अल्लाह की पैदा की हुई विशेषता है, दवा, शिफा का साधन और बहाना बनता है, वह भी अगर अल्लाह करीम चाहे, अगर उसकी मरजी न हो तो कोई दवा असर नहीं करती, बल्कि चिकित्सा को उचित दवा सूझती ही नहीं, जैसा कि बुजुर्गों ने कहा है “चूं क़ज़ा आयद तबीब अबलह शवद” जब किसी का वक्त आ जाता है तो अच्छे भले चिकित्सक की समझ बूझ जवाब दे देती है।

अनाड़ी चिकित्सक — तिब्बे नबवी (नबवी चिकित्सा) के विषय में हम एक ऐसी हदीस नकल कर रहे हैं जो अपनी महत्वपूर्णता और अर्थ के एतिबाब से हदीस नबवी की कई किताबों में अंकित है :

हजरत रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद है “जिस व्यक्ति ने किसी रोगी का इलाज किया, हालांकि इस विषय में उसको पहले से कोई जानकारी नहीं थी, इस हाल में यदि मरीज को कोई नुकसान पहुंच गया तो इसकी जिम्मेदारी चिकित्सक पर है।” (अबूदूआज़द व नसई आदि)

उन तमाम लोगों को इस हदीस

पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए जो चिकित्सा और इलाज के विषय में कुछ नहीं जानते इसके बावजूद मानव स्वास्थ्य से खेलते हैं वह न केवल कानून की दृष्टि में अपराधी हैं बल्कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा और आदेश के अनुकूल अल्लाह के सामने उत्तरदायी हैं।

अनाड़ी चिकित्सकों के अलावा प्रमाणित चिकित्सकों को भी (वह हकीम हों या डाक्टर, होमियोपैथ हों या एलोपैथ) यह वास्तविकता नहीं भूलनी चाहिए कि वह बहरहाल इन्सान हैं और कोई इन्सान भी हर दवा और हर मर्ज के इलम का दावा नहीं कर सकता है। अतः जब भी वह किसी रोग की जांच न कर सकें अथवा उचित दवा को नियुक्त न कर सकें तो केवल अटकल और अनुमान से काम न लें, यदि जान बूझ कर ग़लत इलाज से मरीज़ को कोई नुकसान पहुंचा तो खुदा और इन्सान दोनों के आगे ऐसे चिकित्सक उत्तरदायी होंगे।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्रतिष्ठ कथन और आदेश को पढ़कर अनाड़ी चिकित्सकों को अल्लाह से ताबा करनी चाहिए, और मानव जीवन से खिलवाड़ करने का काम छोड़ देना चाहिए।

(पृष्ठ २७ का शेष)

पीना, बात चीत करना चलना, फिरना, सलाम या सलाम का जवाब या तस्बीह पढ़ना या किसी को शर्झी मसला बताना जैसा कि हालते नमाज़ में मना है वैसा ही उस वक्त भी मना है। और नबी करीम सल्ल० का नाम अगर खुत्बा में आए तो मुक्तबिदयों को अपने दिल में दुरुद शरीफ पढ़ लेना जायज है।

सिल-ए-रहिमी (विश्वा जोड़ने) का अर्थ एवं उसका महत्व

मुफ्ती सै० अब्दुर्रहीम लाजपूरी

नातेदारों से सिल-ए-रहिमी के कारण अल्लाह तआला उसे आज्ञापालन का साहस देते हैं। और जीवन के बहुमूल्य क्षण ऐसे कामों में व्यतीत होते हैं जो आखिरत (परलोक) में लाभदायक हों, व्यर्थ कामों में समय नष्ट करने से अल्लाह तआला उसकी रक्षा करते हैं और जो व्यक्ति सिल-ए-रहिमी (रिश्ता जोड़ने) का काम करते हैं उसके मरने के बाद लोग उसको अच्छे शब्दों में याद करते हैं और उसके लिए दुआ करते हैं। इसकी पुष्टि “मिश्कात शरह-ए-मिश्कात” (पृ० १६५, भाग-१, मुल्तानी) से होती है।

मआरिफल हदीस में हज़रत मौलाना मु० मनजूर साहब रह० चर्चित हदीस की व्याख्या करते हुए फरमाते हैं –

अल्लाह तआला की किताब कुरआन शरीफ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीसों में यह वास्तविकता जगह जगह बताई गई है कि कुछ अच्छे कामों के बदले में अल्लाह तआला इस दुनिया में भी “बरकतों” से माला माल करता है – इस हदीस में बताया गया है कि सिल-ए-रहिमी अर्थात् नातेदारों के हुकूक (अधिकारों) की अदाइगी और

उनके साथ सदुव्यवहार वह मुबारक अमल है जिसके बदले में अल्लाह तआला की ओर से जीविका के फैलाव और आयु में उन्नति और बरकत होती

है। सिल-ए-रहिमी के दोही उपाय हैं एक यह कि आदमी अपनी कमाई से रिश्तेदारों की माली खितदम करे, दूसरे यह कि अपने समय और जीवन का कुछ हिस्सा (अंश) उनके कामों में लगाए, उसके बदले में जीविका और धन में बढ़ोत्तरी और जीवन्त काल में उन्नति और बरकत बिल्कुल समझ के अनुकूल है और अल्लाह तआला की हिक्मत और रहमत के भी अनुकूल है।

मानव समाज के दृष्टिकोण और अनुभव से यह बात स्पष्ट है कि परिवारिक झगड़े और घरेलू उलझनें जो अधिकतर नातेदारी के हुकूक (अधिकार) पूरे न करने की वजह से पैदा होती हैं, आदमी के लिए दिल की परेशानी और मानसिक कुद्दन और घुटन का कारण बनती हैं और कारोबार, स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं, इसके विपरीत जो लोग नातेदार और परिवार वालों के साथ सिल-ए-रहिमी और सदुव्यवहार करते उनका जीवन आनन्दमय होता है और हृदय उनका सन्तुष्ट रहता है, किसी प्रकार की परेशानी नहीं महसूस करते, हर समय अल्लाह की दया और कृपा उन पर रहती है। (मआरिफफुल हदीस पृ. ६४, ६५ भाग-६)

हदीस शरीफ : हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबी औफ रज़ि० से रवायत है, फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को यह फरमाते हुए सुना, जिस कौम में कत-ए-रहिमी करने वाला (नाता तोड़ने वाला) हो उस कौम (जमात) पर अल्लाह तआला की रहमत नाज़िल नहीं होती। (मिश्कात शरीफ पृ. ४२० बाबुल बिर वस्सिलह)

को यह फरमाते हुए सुना है, अल्लाह तबारक व तआला इरशाद फरमाते हैं “मैं अल्लाह हूं और मैं रहमान हूं मैंने रिश्ता पैदा किया और अपने नाम से उसका नाम निकाला बस जो उसको जोड़ेगा उसको मैं अपनी रहमत से जोड़ूंगा और जो उसे काटेगा, मैं उसको अपनी रहमत खास से अलग कर दूंगा।” (मिश्कात शरीफ – पृ. ४२०)

सारांश यह है कि “सिल-ए-रहिमी” वाजिब है और इसमें किसी का विरोध नहीं है, और “कत-ए-रहिमी” नाता तोड़ना “गुनाह कबीरा” बड़ा पाप है, “सिल-ए-रहिमी” की श्रेणियां हैं, कुछ, कुछ से ऊंची हैं, “सिल-ए-रहिमी” की कम से कम की श्रेणी यह है कि कि बात चीत बन्द न करे, (किसी कारण से बात चीत बन्द हो गई हो) तो सिल-ए-रहिमी यह है कि आपस में बातचीत शुरू कर दें अगरचि सलाम ही से हो। (मिश्कात शरह-ए-मिश्कात–पृ. १६६, भाग ६)

हदीस शरीफ का अनुवाद :

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफ रज़ि० से रवायत है, फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को यह फरमाते हुए सुना, जिस कौम में कत-ए-रहिमी करने वाला (नाता तोड़ने वाला) हो उस कौम (जमात) पर अल्लाह तआला की रहमत नाज़िल नहीं होती। (मिश्कात शरीफ पृ. ४२० बाबुल बिर वस्सिलह)

अल्लामा तूर पुश्ती रह० फरमाते हैं : इसका उद्देश्य वह कौम है जो नाता तोड़ने वाले की मदद करती हो और नाता तोड़ने के बावजूद उसकी भर्त्सना न करती हो, और इसकी संभावना है कि “रहमत से बारिश का अभिप्राय हो, रिश्ता तोड़ने की वजह से बारिश रोक दी जाती है।

(मिशकात शारहे मिशकात पृ. २०२, भाग-१)

ध्यान दीजिए! कितनी बड़ी चेतावनी है रिश्ता तोड़ने वालों को जो गुनाह (पाप) होता है वह तो होता ही है, जो लोग उस गुनाह पर उसकी सहायता करते हैं वह भी खुदा की रहमत (करुणा) से वंचित हो जाते हैं।

अल्लाह अपनी पनाह में रखे।

हदीस शरीफ का अनुवाद : हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन आस रज़ि० से रवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया एहसान जितलाने वाला, वालिदैन (माँ बाप) या उनमें से किसी एक की नाफरमानी या (अवज्ञा) करने वाला और शराब पीने वाला जन्नत में दाखिल न होगा।

(निसाई, दारमी, मिशकात शरीफ)

अल्लामा तूर पुश्ती रह० फरमाते हैं इस हदीस का मिस्दाक (चरिताथी) यह है कि यह शर्ख़स (व्यक्ति) फाइजीन (कामयाब होने वालों जिनको शुरू ही में जन्नत में दाखिल होना नसीब होगा) के साथ दाखिल न होगा, या अपने उस अमलेबद (दुष्कर्म) की सजा भुगते बिना उसको जन्नत में दाखिला नसीब न होगा। हाँ अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ले से या किसी की

शफाअत (अमिस्ताव) से मआफ़ फरमा दे तो यह अल्लाह तआला के इस्तियार में है।

(मिशकात शरहे मिशकात पृ. २०२, भाग-६)

हदीस शरीफ का अनुवाद : हज़रत अबू बकरह रज़ि० से रवायत है कि रसूलुल्लाहु सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया, जुल्म (अत्याचार) कत-ए-रहिमी (रिश्ता तोड़ना) से अधिक कोई गुनाह ऐसा नहीं है कि उस गुनाह करने वाले को जल्द दुन्या में सज़ा दी जाती हो, उस अज़ाब के साथ जो उसके लिए आखिरत (परलोक) में ज़खीरे (स्टाक) के तौर पर रखा गया है।

(मिशकात शरीफ पृ. ४२०)

शेखुल हदीस हज़रत मौलाना मु० ज़क़रया रह० लिखते हैं -

अर्थात् यह दो गुनाह जुल्म (अत्याचार) और कत-ए-रहिमी (रिश्ता तोड़ना) ऐसे हैं कि आखिरत में तो उन पर जो कुछ बबाल (आपत्ति) होगा, वह तो होगा ही, आखिरत के अलावा दुन्या में भी उनकी सजा बहुत जल्द मिलती है एक और हदीस में है कि हक तआला शानुहू हर गुनाह की जब चाहे मग़फिरत (मआफ़) फरमा देते हैं। मगर वालिदैन (माँ बाप) की कत-ए-रहिमी नाता तोड़ने की सजा मरने से पहले दे देते हैं। (मिशकात)

एक हदीस में है कि हर गुनाह की सजा अल्लाह जल्लशानुहू आखिरत पर मुअख्खर (विलबित) फरमा देते हैं लेकिन वालिदैन (माँ बाप) की नाफरमानी (अवज्ञा) की सजा दुन्या में बहुत जल्द दे देते हैं। (जाम-ए-सगीर)

बहुत सी हदीसों में यह भी

वर्णन किया गया है कि हक़तआला शानुहू कियामत के दिन रहिम (रिश्ता) को जबान प्रदान करेंगे, वह अर्श मुअल्ला को पकड़ कर प्रार्थना करता रहेगा कि या अल्लाह जिसने मुझे मिलाया तू उसको मिला, और जिसने मुझे काटा तू उसको काट, बहुत सी हदीसों में है कि हक़तआला शानुहू फरमाते हैं कि ‘रहिम’ का शब्द “रहमान” से निकाला गया है जो उसको मिलाएगा, “रहमान” उसको मिलाएगा, जो उसको काटेगा, रहमान उसको काटेगा, एक हदीस में है कि उस कौम पर “रहमत” नाजिल नहीं होती जिसमें कोई रिश्ता काटने वाला हो, एक हदीस में है कि हर “जुमआरात” को अल्लाह तआला के यहाँ आमाल पेश होते हैं कत-ए-रहिमी (रिश्ता काटने वाले) का कोई अमल कुबूल (स्वीकृति) नहीं होता, (दुर्रमन्सूर)

फकीह अबुल लैस रह० फरमाते हैं कि कत-ए-रहिमी (रिश्ता काटना) इतना खराब गुनाह है कि पास बैठने वालों को भी “रहमत” से दूर कर देता है, इस लिए जरूरी है कि हर आदमी उससे बहुत जल्द तोबा करे और सिल-ए-रहिमी (रिश्ता जोड़ने) का एहतिमाम (व्यवस्था) करे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशाद (आदेश) है कि सिल-ए-रहिमी (रिश्ता जोड़ना) के अलावा कोई नेकी ऐसी नहीं है कि जिसका बदला बहुत जल्द मिलता हो और कत-ए-रहिमी (रिश्ता तोड़ना) और जुल्म (अत्याचार) के अलावा कोई गुनाह ऐसा नहीं जिसका बबाल (दैवी कष्ट) आखिरत (परलोक) में बाकी रहने के साथ साथ दुन्या में जल्दी न मिल जाता हो (तंबीहुल गाफिलीन)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद

रजिं० एक मरतबा सुब्ह की नमाज़ के बअद (पश्चात) एक मजमआ (जनसमूह) में तशरीफ फरमा थे फरमाने लगे, मैं तुम लोगों को कसम देतो हूं कि यदि इस जनसमूह में कोई व्यक्ति कत-ए-रहिमी (रिश्ता काटने वाला) हो तो वह चला जाए, हम लोग अल्लाह तआला से एक दुआ करना चाहते हैं और आस्मान के दरवाजे कत-ए-रहिमी (रिश्ता काटने वाले) के लिए बन्द हो जाते हैं। (तरगीब) अर्थात् उसकी दुआ आसमान पर नहीं जाती, उससे पहले ही दरवाजा बन्द कर दिया जाता है और जब उसके साथ हमारी दुआ होगी तो वह दरवाजा बन्द होने की वजह से रह जाएगी। इनके अलावा बहुत सी रवायात (कथन) से यह मज़मून (अर्थ) मालूम होता है और दुन्या के बहुत से वाकिआत (घटनाएं) बहुत अधिक इसकी शहादत (साक्ष्यति) है कि कत-ए-रहिमी (रिश्ता तोड़ने) वाला दुन्या में भी ऐसी मुसीबतों में फंसता कि फिर रोता है फिरता है और अपनी मूर्खता और अज्ञान से उसको यह खबर भी नहीं होती कि इतने बड़े गुनाह से तोबा करे और उसकी क्षतिपूर्ति करे। (फजा-ए-ल सदकात, भाग-१, हदीस नं. १०)

अनुवाद : उम्मुल मोमिनीन हज़रत आ-ए-शा रजिं० से रवायत है, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरे पास हज़रत जिबरील अलै० आए और कहा कि आज शब-ए-बरात है, और आज रात में बनू कलब की बकरियों के ऊन और बालों के बराबर अल्लाह तआला के आजाद किये हुवेदोज़खी छुटेंगे, अलबत्ता जो मुशरिक (अल्लाह के साथ दूसरों को साझेदार बनाने वाला) होगा

और जो द्वेषी होगा और जो रिश्ते नाते के हुकूक न समझेगा और टखने के नीचे लटका हुआ कपड़ा पहनेगा और जो मां बाप का अवज्ञाकारी होगा और जो शराब पीने का आदी होगा, अल्लाह तआला (आज मुबारक रात में भी) उनकी ओर रहमत की दृष्टि से न देखेगा।

अनुवाद : गुफरान नदवी

(पृष्ठ ३६ का शेष)

बिना शोरबा निकाल निकाल कर दो। जाबिर अल्लाह की कसम खाकर कहते हैं कि सभी ने खाया जो हजार थे परन्तु हमारी हांडी भरी की भरी रह गई।

इन्हे अबी शैबा ने रिवायत किया है कि खुबैब बिन फदैक ने बाप की आंखों में फुल्ली पड़ गई और वह बिल्कुल अन्धे हो गये। आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी आंखों पर दम किया उसी वक्त उनकी आंखें अच्छी हो गईं। रावी कहता है कि मैं ने उन्हें ८०वर्ष की उम्र में सुई में डोरा डालते देखा। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन मुअजिज़ात पर यकीन आ जाने के पश्चात शायद ही कोई इन्सान हो जो आप पर ईमान न लाये।

(पृष्ठ ३७ का शेष)

खराब आवाज सुनाई दी और बदल आई। जिब्रील अलैहिस्सलाम ने बताया कि वह जहन्नम कहती है मुझे मरने का जो मुझ वअदा किया है पूरा कीजिए। अल्लाह तआला का इशाद हुआ कि तेरे लिये तजवीज़ किया गया हर मुशरिक और मुशरिका, और हर काफिर व काफिरा (नास्तिक लोग) हर घमन्डी, कपटी और जोहिसाब के दिन पर यकीन नहीं रखता। दोज़ख ने कहा मैं राजी हो गई।

Anees Ahmad 0522-2242385(S)
2241117(R)

Famous Foot Wear

**Wholeseller and
Retailer, Shoes,
Chappal Sandle,
Sleeper, Bally etc.**

301/11, Saray Bans Akbari Gate,
Luknow

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

Iqbal & Co.

Deals :
FRIEND EMBROIDERY MACHINE

Deals in :

Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki,
Chowk, Lucknow- 2260063

मिअराज यात्रा

मुख्य स्लीन सिद्धीकी

अल्लाह तआला ने अपने रसूलों और नबियों को उनके रसूल होने के तर्क (दलील) में कुछ अदभुत बातें प्रदान कीं जिनको मुआजिज़ा कहते हैं। जैसे मूसा अलैहिस्सलाम का डन्डा अजगर बन जाता। ईसा अलैहिस्सलाम कोढ़ी पर हाथ फेर देते तो स्वस्थ हो जाता। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के हाथ में लोहा मुलाइम हो जाता। हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने बहुत से मुअजिज़े दिये जिनको एकत्र किया जाए तो एक किताब तैयार हो जाए तेकिन इस लेख में केवल मिअराज का वर्णन करना है वह भी संक्षेप में।

सन् १२ नबूवत में जब आप ५१ वर्ष के थे और मक्के में थे कि २७ रजब की रात में हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम बुराक (घोड़े जैसी एक विशेष उड़ने वाली परदार सवारी) लेकर आए और हज़रत को उस पर सवार करा कर पहले बैतुलमुक़द्दस ले गये और फिर वहां से आसमानों पर ले गये और वहां की अदभुत तथा आश्चर्य जनक चीज़ें दिखाई गईं। अल्लाह तआला के दर्शन हुए, जन्नत देखी, दोज़ख, के मनज़र देखे, दूसरे अंबिया अलैहिस्सलाम से भेंट की वहीं पांचों समय की नमाज़ का आदेश मिला। वास्तव में पहले ५० समय की नमाज फर्ज हुई और हमारे हज़रत सल्लल्लाहु अलैहिस्सलाम प्रसन्न चित आ रहे थे कि मूसा अलैहिस्सलाम से भेंट हो गई। उन्होंने पूछा क्या लाए बताया कि

रोजाना पचास वक्त की नमाज़। उन्होंने कहा अरे आप की उम्मत पचास वक्त की नमाज़ न पढ़ सकेगी जाइये कम करवाइये। हमारे हुजूर (सल्ल०) वापस आये और अर्ज़ किया कि मेरी उम्मत ५० वक्त की नमाज़ न पढ़ पाएगी कम कर दीजिए। अल्लाह तआला ने ५ वक्त की कम कर दी आप नीचे आ रहे थे कि मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाकात हुई और बताया कि अब ४५ वक्त की नमाज़ है। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा अभी बहुत है और कम करवाइये। आप फिर अल्लाह तआला के पास गये और नमाज़ कम किये जाने की प्राथना की। फिर पांच समय की कम हो गई। लेकिन फिर मूसा अलैहिस्सलाम ने और कम कराने के लिए लौटाया। इस तरह बार बार लौटाते और कम कराते गये यहां तक कि ५ समय की नमाज़ रह गई साथ ही अल्लाह तआला ने फरमाया कि ५ समय की नमाज का सवाब ५० समय की नमाज का मिलेगा। इस पर भी मूसा अलैहिस्सलाम ने कम कराने को कहा परन्तु अब हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और कम कराने के लिए जाने को तैयार न हुए।

भाइयो नमाज़ मिअराज का तुहफा (उपहार) है। इसमें हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आंखों की ठंडक है यह दीन का स्तम्भ है यह कुफ्र और इस्लाम के बीच अंतर करने वाली है। अल्लाह की ओर से फर्ज़ की गई है इसमें हम कोताही न करें।

मिअराज यात्रा का बयान हदीसों

में बहुत मिलता उन को जमा किया जाए और उनका अर्थ बयान किया जाए तो एक पुस्तक तैयार हो जाए, परन्तु संक्षेप के ख्याल से इस लेख में तो हम केवल एक रिवायत और बयान करेंगे।

हज़रत अबू हुरैरा (रजि०) की मिअराज के बयान की एक लम्बी रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक वादी पर गुजर हुआ वहां एक ओर से ठण्डी हवा और मुश्क (कस्तूरी) की सुगन्ध आई और एक आवाज सुनी। आप ने पूछा कि यह क्या है? जिब्रील अलैहिस्सलाम ने बताया कि यह जन्नत की आवाज है वह कहती है कि ऐ रब जो मुझ से अङ्गद किया है मुझ को दीजिए। अल्लाह तआला ने फरमाया तेरे लिए तजवीज़ किया गया हर मुस्लिम और मुस्लिमा और मोमिन और मोमिना और जो मुझ पर और मेरे रसूलों पर ईमान लाये और मेरे साथ शरीक न करे और जो मुझ से डरेगा वह मामून रहेगा और मुझसे मांगे गा मैं दूगा और जो मुझको कर्ज देगा मैं उसको बदला दूंगा, जो मुझ पर भरोसा करगा मैं उसको किफायत करूंगा अर्थात पर्याप्त हूंगा मैं अल्लाह हूं। मेरे सिवा कोई मअबूद (उपास्य) नहीं। मैं वअदा खिलाफी नहीं करता। बेशक मोमिनों को सफलता मिली। मैं अहसनुल खालिकीन हूं। बरकत वाला हूं। जन्नत ने कहा मैं राजी हो गई। फिर एक वादी पर गुजर हुआ, एक बुहत ही

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत

नासिर अय्यूब

हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हर जिक्र (वर्णन) बा बरकत और सवाब वाला है वही बरकत प्राप्त करने के लिए मैं हिजरत का बयान बहुत ही संक्षेप में लिख रहा हूँ।

जब अन्सार (उस समय के मदीना वासी मुसलमान) अक़बः की बैअत (भक्ति प्रतिज्ञा) हो चुकी और वह लोग हर प्रकार से सहयोग को तैयार हो गये तो रसूलुल्लाह अलैहि वसल्लम ने मक्के के मुसलमानों को (जो बहुत सताये जा रहे थे उनको आदेश दिया कि वह चुपके चुपके मदीना चले जाएं चुनांचि वह चुपके चुपके चले गये। अल्बत्ता हज़रत उमर फारुक (रज़ि०) घोषणा कर के निकले और कहा कि मैं जा रहा हूँ तुम में से जिस को अपने बच्चों को यतीम करना और अपनी पत्नियों को विधवा करना हो आके मुझ को रोके। मगर किसी में कुछ कहने का साहस न हुआ।

अब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बक्र और हज़रत अली कर्मल्लाहु वजहहूँ अभी मक्के ही में थे कि एक रात मक्के के काफिरों ने बुरे इरादेसे हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का घर घेर लिया। अब हमारे हुजूर सल्ल० को भी मक्का छोड़कर मदीना जाने का इलाही आदेश हो गया। हज़रत अली रज़ि० को धरोहरों के विषय में समझाया कि फुलां फुलां को देना है फिर अपने बिस्तर पर

लिटा कर निकल पड़े चमत्कार प्रकट हुआ किसी को न दिखे। हज़रत अबू बक्र के घर आये और उनको साथ लेकर मक्के से निकल पड़े भोर होते गोर सौर पहुँचे। उसके अन्दर चले गये। साफ किया वहीं आराम किया। इधर मक्के के काफिर घर में घुसे बिस्तर पर आप को न पाकर बहुत ताव में आए आप की खोज में हर ओर घोड़े दौड़ाए। ढूँढ़ निकालने वाले के लिए १०० ऊंठों के पुरष्कार की घोषणा हुई। कुछ लोग गार के मुख तक पहुँच गये परन्तु उस पर तो मकड़ी का जाला तना हुआ था रास्ते में कबूतर की झोँझ में अन्डे थे, यह इलाही सहयोग थे। हज़रत अबू बक्र गार से उन लोगों के पैर देख रहे थे। घबराये, हज़रत ने ला तहज़िन इन्नल्लाह मअ़ना (दुखी न हों अल्लाह हमारे साथ है) फरमाया : सब ने कहा इस गार में कोई नहीं गया। निराश हो कर लौट आये हमारे हुजूर तीन रोज तक उस गार में रहे। फिर वहां से निकले मदीने की ओर चल दिये रास्ते भर हज़रत अबू बक्र अदभुत बातें देखते रहे। जैसे सुराक़ा जो आप की खोज में आप के पीछे आ पहुँचा तो उसके घोड़े के पैर धंस गये यहां तक कि उसने मुआफ़ी मांगी। उसके लिए किस्म के कंगनों की भविष्यवाणी हुई जो हज़रत उमर (रज़ि०) के खिलाफ़ काल में पूरी हुई। उम्मे मअबद की दुबली बकरी जिसके थन सूख गये थे

उसका दूध देना आदि। १२ रबीउलअब्दल को आप मदीना पहुँचे मदीना वालों ने भव्य स्वागत (इस्तिक़बाल) किया। हर ओर अल्लाह के नबी आये, अल्लाह के नबी आये शोर था। बच्चियों ने खुशी में गाया।

तलअल बदु अलैना
मिन सनियातिल वदाइ
वजब इशुक्रु अलैना
मा दआ लिल्लाह दाइ
अय्युलहल मबऊसु फीना
जिअत बिलअभ्रिल मताइ
सानियातिल वदाइ की चोटियों से
पूर्णिमा का चन्द्रमा चमका है हम पर
इस बड़े उपकार पर कियामत तक
खुदा का शुक्र हुआ वाजिब है हम पर
ऐ कि जो आये हमारे बीच हो
जो लाये हो उसे रखें गे हम दिल पर

(पृष्ठ १७ काँशेष)

उसको भूल न जाओ और उसकी विशेषता के बाकी रखने से लापरवाह न हो जाओ। यही सन्देश हम को अल्लाह की किताब कुर्�आन मजीद से मिलता है और यही पैगाम सीरत (चरित्र) के जलसों से मिलता है और यही पैगाम हमको सीरत की किताबों और आप सल्ल० की हदीसों से मिलता है। अल्लाह तआला हमको सच्चे मार्ग पर चलने की क्षमता प्रदान करे जिसकी निर्भरता एक खुदा की बन्दगी और उसके आखिरी रसूल की ताबेदारी और उसकी महब्बत पर है।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी

हमारे हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के कुछ मुअजिज़े

मु० अहसन

अल्लहा तआला ने हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अनगिनत मुअजिज़ात अता फरमाये उनमें से कुछ का वर्णन किया जाता है।

सब से बड़ा मुअजिज़ा आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का कुर्�आन मजीद है कि ऐसी वाणी बनाना समस्त सृष्टि के लिए असम्भव है। जब कि हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के अलावा किसी के भी शिष्य न हुए न किसी से पढ़ना सीखा न लिखना।

कुर्�आन तो अल्लाह की वाणी है। वह अनपढ़ पर इसी लिए उतारा ही गया है ताकि कोई यह न सोच सके कि यह तो किसी बड़े विद्वान मानव की रचना है। यह साहित्यिक दृष्टि से हर प्रकार परिपूर्ण हैं। इस के अर्थों में कहीं भी विलोमता नहीं, इस की सभी भविष्य वाणियां सत्य सिद्ध हुईं इस की सुरक्षा का स्वयं अल्लाह ने ज़िम्मा लिया जो शब्द, अर्थ तथा व्यावहारिक प्रयोग हर प्रकार से सुरक्षित है। तात्पर्य यह कि पवित्र कुर्�आन हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सबसे उत्तम मुअजिज़ा है। अब कुछ और मुअजिज़ों का उल्लेख किया जाता है।

उस्तुने हन्नाना : हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मस्तिष्ठ में खुत्बा (भाषण) देते तो एक

खम्बे से टेक लगा लेते, यह खम्बा खजूर का एक तना था, जब तक मिम्बर न बना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसी खम्बे को प्रयोग करते रहे। जब मिम्बर बन गया तो आप ने मिम्बर पर से खुत्बा देना आरम्भ किया तो खजूर वाला खम्बा ज़ोर ज़ोर से रोने लगा आप मिम्बर से उतरे और उसको अपने सीने से चिम्टा लिया तब वह बच्चों की तरह सिस्कियां लेने लगा फिर चुप हो गया।

बरकते तआम :

बरकते तआम का अर्थ है खाने में बढ़ोतरी एक समय हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास एक प्याला दूध आया जिसे अस्फ़ाबे सुफ़ा ने जी भर भर कर पिया, फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश से हज़रत अबू हुरैरा ने खूब जी भर कर और पेट भर कर पिया अन्त में हमारे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पिया इतनी बरकत हुई एक प्याला दूध में।

सहीहैन (अर्थात् बुखारी व मुस्तिष्ठ) में हज़रत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि हुदैबिया में लोग प्यासे हुए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने एक लोटा था, उससे आप (सल्ल०) ने वुजू किया। लोगों ने कहा कि हमारी सेना में न पीने के लिए पानी है न वुजू के लिए सिवाए

इसके कि जो आप के लोटे में है। पस आप ने अपने शुभ हाथों को लोटे में रखा और पानी आप की उंगलियों से निकलने लगा सो हम सब लोगों ने पिया और वुजू किया। हज़रत जाबिर से पूछा गया कि तुम कितने आदमी थे ? फरमाया हम १५०० थे लेकिन एक लाख होते तो सब को मिल जाता। (सल्लल्लाहु अला नबियिना वसल्लम) हज़रत जाबिर रज़ि० से सहीहैन में एक और रिवायत इस प्रकार है कि खन्दक की लड़ाई के दिनों में उन्होंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए एक बकरी का बच्चा ज़ब्ब किया और लगभग तीन किलो जौ का आटा तैयार करके हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आकर चुपके से कहा कि आप दो चार आदमियों के साथ चल कर खाना खा लीजिए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खन्दक खोदने वाले सभी लोगों को जो १००० थे एकत्र किया और भोजन खाने चल दिये। जाबिर (रज़ि०) को आदेश दिया कि मेरे पहुंचने से पहले न हान्डी उतारना न रोटी पकाना आरंभ करना। आप जाबिर के घर पहुंचे और गुच्छे हुए आटे में और हान्डी में कुछ अपना शुभ थूक डाल दिया और बरकत की दुआ की और फरमाया कि एक पकाने वाली और बुलवा लो और हान्डी उतारे

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

● विदेशी मुद्रा (Foreign Exchange) के बढ़ते भण्डा का चर्चा मीडिया द्वारा बड़े जोर शोर से किया जा रहा है और भारत सरकार इसको अपनी बहुत बड़ी उपलब्धि बता रही है। सन् १९६१ में हमारा मुद्रा भण्डार केवल ४ अरब डालर था जो चन्द हफ्तों के भुगतान के लिए भी काफ़ी नहीं था, उसमें अब १०६ अरब डालर की बहुत बड़ी रकम हो गई है। हमें १९६१ में अपना सोना लंदन में गिरवी रखना पड़ा था और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की शर्तें के दबाव में उससे कर्ज़ लेना पड़ा था उस की तुलना में आज के मुद्रा भण्डार की उपलब्धि काफ़ी प्रभावशाली दिखाई पड़ती है।

लेकिन इसकी वास्तविकता क्या है यह जानने के लिए हमें हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक के द्वारा प्रकाशित आंकड़ों पर ध्यान देना होगा। इससे पता चलता है कि यह वृद्धि भारत के विदेश व्यापार से नहीं हुई है। विदेश व्यापार में तो लगातार हर वर्ष भारी घाटा हो रहा है। समय के साथ निर्यात और आयात (Export and Import) की खाई बढ़ रही है आयात बढ़ रहा है और निर्यात घट रहा है जिसके फलस्वरूप हर वर्ष घाटा बढ़ता जा रहा है। १९६०-६१ से वर्ष २००२-२००३ का घाटा जोड़ें तो भारत सरकार का कुल घाटा १३८ अरब से अधिक विदेश व्यापार में हुआ है जाहिर है विदेश व्यापार से भारत की विदेशी मुद्रा की झोली नहीं बढ़ी बल्कि तेजी से खाली हुई है।

यह झोली तीन छोतों से भरी

है। १. विदेशों में काम कर रहे भारतीयों द्वारा अपने घरों का भेजा गया पैसा २. विदेशी निवेश अर्थात् विदेशी पूँजी जो यहां कम्पनियों में लगाई गई है। तथा वह पूँजी जो विदेशी कम्पनियां शेयर बाज़ार में लगा रही हैं। ३. और तीसरा विदेशी कर्ज़ जिसमें विदेशी सहायता, कारोबारी कर्ज और विदेश में नौकरी करने वालों की जमा राशि शामिल है।

विदेशी निवेश तथा विदेशी कर्ज़ द्वारा आई विदेशी मुद्रा किसी समय भी उड़नछू हो सकती है। जो विदेशी मुद्रा विदेशी निवेश और कर्ज़ से हमारे देश में आ रही है वह हमारी पूँजी नहीं है। वह आज नहीं तो कल वापस जाने वाली है साथ ही सूद की रकम भी ले जाएगी। जो कर्ज़ और पूँजी निवेश विदेशी मुद्रा की सूरत में हमारे पास आ रही है वह हमारी कमाई नहीं है बल्कि इस देश से कमाई करके ले जाने के लिए आई है। इससे हमारी देनदारी बढ़ रही है और भविष्य में देश से प्रवाह बढ़ेगा और अचानक हमारा विदेशी मुद्रा भण्डार घटना शुरू हो जाएगा।

● इराक़ युद्ध से आतंकवाद को बढ़ावा मिला : अमरीका और यूरोप के एक सर्वेक्षण से पता चला कि इराक़ युद्ध ने संसार में आतंकवाद के ख़तरे को बढ़ा दिया है। यह सर्वेक्षण एसोशियेटेड प्रेस नामी एजेंसी द्वारा किया गया है। यह सर्वेक्षण ब्रिटेन, कनाडा, फ्रांस, इटली, जर्मनी, मैक्सिको, स्पेन और अमरीका में कराया गया था। उपरोक्त सभी देशों अधिकांश निवासी

मानते हैं कि आतंकवादी ख़तरा इराक़ युद्ध से पूर्व की तुलना में अब अधिक बढ़ गया है जबकि १० में से १ से भी कम यूरोपी मानते हैं कि यह ख़तरा कम हुआ है। कनाडा और फ्रांस ५० प्रतिशत से अधिक ७५ प्रतिशत से अधिक जर्मन मानते हैं कि इराक़ी युद्ध से अंतर्राष्ट्रीय दशा और भी खराब हो गई है। इटली और जर्मनी के लोग आतंकवादी गतिविधियों से बहुत डरे हुए हैं। १० में से ६ का मानना है कि अब उन्हें ऐसी कारबाई का बराबर डर बना रहता है। ८५ प्रतिशत स्पेनियों का कहना है कि उनके देश में भी आतंकवादी पार्टियां सिर उठा रही हैं। कनाड़ा के अधिकांश लोग आतंकवादियों से भयभीत हैं। इन देशों के अधिकतर लोग मानते हैं कि इसराईल और फिलिस्तीन की हिंसक कारबाईयों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद को फैला दिया है। सर्वेक्षण का एक दिलचस्प पहलू यह है कि अमरीका को छोड़ कर शेष उपरोक्त देशों का बहुमत राष्ट्रपति बुश की आतंकवाद निराकरण पालिसी के विरुद्ध हैं। लगभग ६६ प्रतिशत ब्रिटिश यह मानते हैं कि बुश की आतंकवाद निराकरण पालिसी सही नहीं है।

● एक सऊदी मानव अधिकार समिति की कार्यकारिणी बोर्ड के चुनाव में ३ महिलाएं निर्वाचित हुई हैं। यह सूचना लंदन से प्रकाशित होने वाले अरबी समाचार पत्र अलहियात ने दी है। मानव अधिकार सऊदी राष्ट्रीय एसोसियेशन के संस्थापकों ने सऊदी सरकार से समिति के काम काज करने की अनुमति मांगी थी। यह अपने ढंग की सऊदी अरब में पहली संस्था है। ११ सदस्यी कार्यकारिणी के लिए हुए चुनाव में तीन महिलाएं चुनी गईं। इस संस्था के ४१ संस्थापकों में १० महिलाएं हैं।

